Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 43

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

26 अक्तूबर 2017 ई. 5 सफर 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

मेरे लिए कुफ्र के फ़त्वे मंगाए गए और मुझे काफ़िर कह कर संसार में एक शोर डाला गया। कत्ल करने के फ़त्वे दिए गए, शासकों को उकसाया गया, जन साधारण को मुझ से और मेरी जमाअत से विमुख किया गया। अत: प्रत्येक प्रकार से मुझे मिटाने के लिए प्रयास किए गए परन्तु ख़ुदा तआला की भविष्यवाणी के अनुसार ये समस्त मौलवी और उनके सहपंथी अपनी कोशिशों में असफल रहे।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

77. सतत्तरवां निशान - मेरा लड़का बशीर अहमद आंखों के रोग से ऐसा रोग ग्रस्त हुआ कि कोई औषधि लाभप्रद नहीं हो सकती थी तथा दृष्टि जाते रहने का भय था। जब रोग भयंकर अवस्था को पहुंच गया तब मैंने दुआ की तो इल्हाम हुआ بَرَق طفلی بشیر अर्थात् मेरा पुत्र बशीर देखने लगा। अत: उसी दिन या दूसरे दिन वह स्वस्थ हो गया। यह घटना भी लगभग सौ लोगों को मालूम होगी।

78. अठत्तरवां निशान - जब मैंने छोटी मस्जिद का निर्माण किया जो हमारे घर के साथ एक कोने पर है। तब मुझे विचार आया कि इसकी कोई तिथि चाहिए तब ख़ुदा तआला की ओर से इल्का हुआ -

مبارک ومبارک و کل امرٍ مبارک یجعل فیہ

यह एक भविष्यवाणी थी और इसी से मस्जिद की नींव की तिथि का तत्त्व निकलता है।

79. उनासीवां निशान - बराहीन अहमदिया में इस जमाअत की उन्नति के बारे में यह भविष्यवाणी है -

کزرع اٰخرج شطأہٗ فاٰزرہ فاستغلظ فاستوىٰ علٰی سُوْقِہٖ۔

अर्थात् पहले एक बीज होगा जो अपनी हरियाली निकालेगे फिर मोटा होगा फिर अपने तने पर खड़ा होगा यह एक बड़ी भविष्यवाणी थी जो इस जमाअत के पैदा होने से पहले ही उसके विकास के बारे में आज से पच्चीस वर्ष पूर्व की गई थी। ऐसे समय में कि न उस समय जमाअत थी और न किसी का मुझे बैअत का संबंध था अपितु उनमें से कोई मेरे नाम से भी परिचित न था। इस के बाद ख़ुदा तआला की कृपा ने यह जमाअत पैदा कर दी, जो अब तीन लाख से भी कुछ अधिक है। मैं एक छोटे से बीज की भांति था जो ख़ुदा तआला के हाथ से बोया गया। फिर मैं एक समय तक गुप्त रहा, फिर मेरा प्रकटन हुआ और बहुत सी शाखाओं ने मेरे साथ संबंध स्थापित किया। अत: यह भविष्यवाणी केवल ख़ुदा तआला के हाथ से पूरी हुई।

80. अस्सीवां निशान - बराहीन अहमदिया में यह भविष्यवाणी है

یُرِیدون ان یطفئوْا نور اللہ بافواھھم واللہ متمّ نورہٖ ولو کرہ الکافرون۔

अर्थात् विरोधी जन चाहेंगे कि ख़ुदा के प्रकाश को अपने मुख की फूंकों से बुझा दें, किन्तु ख़ुदा अपने प्रकाश को पूर्ण करेगा यद्यपि इन्कारी लोग पसन्द ही न करें। यह उस समय की भविष्यवाणी है जब कि कोई विरोधी न था अपितु कोई मेरे नाम से भी परिचित न था। तत्पश्चात् भविष्यवाणी के अनुसार संसार में सम्मान के साथ मेरी प्रसिद्धि हुई तथा हज़ारों लोगों ने मुझे स्वीकार किया तब इतना अधिक विरोध हुआ कि मक्का से मक्का वालों के पास वास्तविकता के विरुद्ध बातें वर्णन करके मेरे लिए कुफ्र के फ़त्वे मंगाए गए और मुझे काफ़िर कह कर संसार में एक शोर डाला गया। कत्ल करने के फ़त्वे दिए गए, शासकों को उकसाया गया, जन साधारण को मुझ से और मेरी जमाअत से विमुख किया गया। अत: प्रत्येक प्रकार से मुझे मिटाने के लिए प्रयास किए गए परन्तु ख़ुदा तआला की भविष्यवाणी के अनुसार ये समस्त मौलवी और उनके सहपंथी अपनी कोशिशों में असफल रहे। खेद विरोधी कितने अधिक अंधे हैं इन भविष्यवाणियों की श्रेष्ठता को नहीं समझते कि किस युग की हैं और किस प्रतिष्ठा और शक्ति के साथ पूरी हुईं। क्या ख़ुदा तआला के अतिरिक्त किसी अन्य का कार्य है ? यदि है तो इसका उदाहरण प्रस्तुत करो। विचार नहीं करते कि यदि यह मानव का कारोबार होता और ख़ुदा की इच्छा के विपरीत होता तो वे अपने प्रयासों में असफल न रहते। उनको किसने असफल रखा ? उसी ख़ुदा ने जो मेरे साथ है।

81. इक्यासीवां निशान - बराहीन अहमदिया में एक यह भी भविष्यवाणी है یعصمک اللہ من عندہ ولو لم یعصمک النّاس۔ अर्थात् ख़ुदा तुझे समस्त विपत्तियों से बचाएगा यद्यपि लोग नहीं चाहेंगे कि तू विपत्तियों से बच जाए। यह उस युग की भविष्यवाणी है जबकि मैं एक अज्ञान कोने में छुपा पड़ा था तथा मुझे से न कोई बैअत का संबंध रखता था न शत्रुता। इस के बाद जब मैंने मसीह मौऊद होने का दावा किया तो समस्त मौलवी और उनके सहपंथी अग्नि के समान हो गए। उन ही दिनों में एक पादरी डाक्टर मार्टिन क्लार्क ने मुझ पर एक खून का मुक़द्दमा किया। उस मुक़द्दमे में मुझे यह अनुभव हुआ कि पंजाब के मौलवी मेरे रक्त के प्यासे हैं और मुझे एक ईसाई से भी जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का शत्रु है और गालियां निकालता है निकृष्ट समझते हैं क्योंकि कुछ मौलवियों ने इस मुक़द्दमे में मेरे विरुद्ध अदालत में उपस्थित होकर उस पादरी के साक्षी बनकर साक्ष्यें दीं और कुछ इस दुआ में लगे रहे कि पादरी लोग विजयी हों। मैंने विश्वस्त सूत्रों से सुना है कि वे मस्जिदों में रो-रोकर दुआएं करते थे कि हे ख़ुदा ! इस पादरी की सहायता कर, उसे विजयी कर। परन्तु सर्वज्ञा ख़ुदा ने उनकी एक न सुनी। न साक्ष्य देने वाले अपनी साक्ष्य में सफल हुए और न दुआ करने वालों की दुआएं स्वीकार हुईं। ये उलेमा हैं धर्म के समर्थक, और यह जाति है जिसके लिए लोग जाति-जाति पुकारते हैं। इन लोगों ने मुझे फांसी दिलाने के लिए अपनी समस्त युक्तियों द्वारा ज़ोर लगाया तथा एक ख़ुदा और उसके रसूल के शत्रु की सहायता की। यहां स्वाभाविक तौर पर हृदयों में एक विचार आता है कि जब ये क़ौम के समस्त मौलवी तथा उनके अनुयायी मेरे प्राणों के शत्रु हो गए थे फिर किस ने मुझे उस भड़कती अग्नि से बचाया हालांकि मुझे अपराधी बनाने के लिए आठ-नौ साक्षी गुज़र चुके थे। इसका उत्तर यह है कि उसी ने बचाया जिसने पच्चीस वर्ष पूर्व यह वादा दिया था कि तेरी क़ौम तो तुझे नहीं बचाएगी तथा प्रयास करेगी कि तू मारा जाए परन्तु मैं तुझे बचाऊंगा, जैसा कि उसने पहले से कहा था कि जो बराहीन अहमदिया में आज से पच्ची वर्ष पूर्व लिखा जा चुका है और वह यह है -

فَبَرَّأَہُ اللہ ممّا قالوا وکان عند اللہ وجیھا

अर्थात् ख़ुदा ने उसे उस आरोप से बरी किया जो उस पर लगाया गया था और वह ख़ुदा के निकट प्रतापवान है।

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 115 -118, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 240-243)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

पहले मसीह की वफात हो गई है हज़रत मसीह ही इमाम महदी हैं

मुहम्मद हमीद कौसर, कादियान

(भाग-3)

इसके अलावा, निम्नलिखित आरंम्भिक हदीस की किताबों में यह हदीस पूर्ण सनद के साथ वर्णित हुई है

1. मुस्तदरिक हाकिम (वफात 405 हिजरी) में लिखा है :

لَا تَقُوْمُ السَّاعَةُ اِلَّا عَلٰى شِرَارِ النَّاسِ وَلَا اَلْمَهْدِيُّ اِلَّا عِيْسٰى بْنُ مَرْيَمَ

(मुस्तदरिक हाकिम जिल्द 4 पृष्ठ 441 किताबुल फितन वल-मलाहिम)

अर्थात क़यामत दुष्ट लोगों पर स्थापित होगी और (दूसरे) इब्ने मर्यम के अतिरिक्त कोई मेहदी नहीं।

2. हुलियतुल औलिया ले हाफिज़ अबू नईम अल्असबानी (वफात 430 हिजरी) में لَا الْمَهْدِيُّ اِلَّا عِيْسٰى بْنُ مَرْيَمَ عليهما السلام के शब्दों का प्रयोग हुआ है।

(हुलियतुल औलिया भाग 5 अंश 9 पृष्ठ 161। लेबनान 1980 ई)

3. कंजुल उम्माल में यह हदीस वर्णन हुई है

لَاتَقُوْمُ السَّاعَةُ اِلَّا عَلٰى شِرَارِ النَّاسِ وَلَا الْمَهْدِيُّ اِلَّا عِيْسٰى بْنُ مَرْيَمَ

(कनज़ुल उम्माल जिल्द 14 पृष्ठ 263, हदीस संख्या: 38656)

4. तारीख बगदाद भाग 4 लेखक हाफिज़ अबू बक्र अहमद बिन अली अलख़तीब बग़दादी वफात 463 हिजरी पृष्ठ 220 पर भी इन्हीं शब्दों के साथ यह हदीस वर्णन हुई है। इन सभी हदीसों में इस हदीस के अंतिम राबी महीन सहाबी हज़रत अनस बिन मालिक हैं।

इसके अलावा "लल् महदी इल्ला ईसा" की हदीस इतनी प्रसिद्ध और मशहूर थी कि उम्मते मुहम्मदिया के कई बुज़ुर्गों और उलेमा अपनी किताबों में इस हदीस को दर्ज करते आए हैं उनमें से कुछ के सन्दर्भ निम्नलिखित हैं :

1. इमाम जलालुद्दीन सियूती लिखते हैं:

قَالَ الْحَسَنُ اِنْ كَانَ مَهْدِيٌّ فَعُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيْزِ وَاِلَّا فَلَا الْمَهْدِيُّ اِلَّا عِيْسٰى بْنُ مَرْيَمَ

(तारीख़ अलख़ुल्फ़ा इमाम जलालुद्दीन सियूती पृष्ठ 163)

कि हज़रत इमाम हसन बसरी कहते हैं कि इस ज़माना में यदि कोई भी महदी है, तो वह उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ है। और यदि नहीं, तो फिर सिवाय ईसा इब्ने मर्यम के कोई दूसरा महदी नहीं है।

2. अल्लामा इब्ने ख़ुलदून अपनी किताब मुकदमा इब्ने ख़ुलदून में लिखते हैं :

عَنِ الْحَسَنِ الْبَصَرِى عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنَّه قَالَ لَا الْمَهْدِيُّ اِلَّا عِيْسٰى ابْنُ مَرْيَمَ

(मुकदमा इब्ने ख़ुलदून भाग 322 लेखक अल्लामा अब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद बिन खुलदून बैरूत लेबनान)

हज़रत इमाम हसन बसरी हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाय कि ईसा इब्ने मरियम के सिवा कोई मेहदी नहीं।

3 मिर्ज़ा हुसैन तबरसी अपनी किताब "नजमुस्साकिब" में लिखते हैं।

"در شرح دیوان از بعضے نقل کرد کہ روح عیسیٰ علیہ السلام در مہدی علیہ السلام بروز کند ونزول عیسیٰ عبارت از این بروز است و مطابق اینست حدیث لا مہدی الا عیسیٰ بن مریم "۔

(नजमुस्साकिब से मिर्ज़ा हुसैन तबरसी नूरी पृष्ठ 102 चतुर्थ अध्याय इनतशारात इल्मिया इस्लामिया)

शरह दीवान में कुछ का यह कथन लिखा है कि ईसा की रूह हज़रत इमाम महदी में बरूज़ करेगी और ईसा के नुज़ूल (उतरने) से अभिप्राय बुरूज़ ही है और उसी के अनुसार यह हदीस है कि ईसा बिन मरियम को छोड़कर कोई महदी नहीं है।

4. हज़रत ख्वाजा ग़ुलाम फरीद फरमाते हैं:

"किसी का यह कथन सही है कि इमाम महदी यही ईसा अलैहिस्सलाम होंगे क्योंकि इसकी पुष्टि इस हदीस से होती है कि لَا الْمَهْدِيُّ اِلَّا عِيْسٰى ابْنُ مَرْيَمَ (ईसा बिन मरियम के सिवा कोई महदी नहीं)।

(मकाबीसुल मजालिस मल्फूज़ात हज़रत ख्वाजा ग़ुलाम फरीद। पृष्ठ 415 मकबूस नंबर 61-प्रस्तुति और सेटिंग मौलाना रुकनुद्दीन अनुवाद कप्तान वाहिद बख्श सयाल साहिब प्रैस बख्तियार प्रिंटर गंज बख्श रोड लाहौर 1979ई)

5. हज़रत अल्लामा मोहिउद्दीन इब्ने अरबी वफात 638 हिजरी ने भी अपनी तफसीरुल कुरआन करीम में لَا الْمَهْدِيُّ اِلَّا عِيْسٰى ابْنُ مَرْيَمَ की हदीस लिखी है।

(तफसीरुल कुरआन अलकरीम अल्लामा मोहिउद्दीन इब्ने अरबी जिल्द 2 पृष्ठ 451 बैरूत 2 संस्करण 1978 ई)

फिर कुछ और सहीह हदीसों भी स्पष्टता से हज़रत ईसा बिन मरियम को इमाम महदी करार दिया गया है अत: हदीस की मशहूर किताब अहमद बिन हंबल में यह हदीस बयान हुई है :

1. يُوْشِكُ مَنْ عَاشَ مِنْكُمْ اَنْ يَلْقٰى عِيْسٰى بْنَ مَرْيَمَ اِمَامًا مَهْدِيًّا وَحَكَمًا عَدَلً

(मुस्नद अहमद बिन हंबल (वफात 241 हिजरी) जिल्द 2 पृष्ठ 411 हदीस नंबर 9068 सनद अबी हुरैरा)

अर्थात हज़रत अबु हुरैरह रिवायत करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो ने फरमाया कि करीब है जो तुम में से जीवित रहे वह (दूसरे) ईसा पुत्र मरयम को मिले जो इमाम महदी और इंसाफ करने शासक होंगे।

2." अलमुसन्निफ" जिस की गिनती प्रारंभिक प्रसिद्ध हदीस की पुस्तकों में होती है यह रिवायत है।

يَنْزِلُ عِيْسٰى بْنُ مَرْيَمَ اِمَاماً هَادِياً وَ مُقْسِطًا عَدلا

(अलमुसन्निफ लेखक अब्दुल रज़्ज़ाक वफात 211 हिजरी जिल्द 11 पृष्ठ 400 बैरूत लेबनान प्रकाशन 1972 ई)

अर्थात ईसा अलैहिस्सालम इमाम हादी और न्यायाधीश और इंसाफ करने वाले की स्थिति से नाज़िल होंगे।

3. इसी तरह इब्ने अबी शियबह की प्रसिद्ध किताब "अलमुसन्निफ" में यह हदीस है اَلْمَهْدِيُّ عِيْسٰى ابْنُ مَرْيَمَ

(अलमुसन्निफ ले इबन अबी शीयबह वफात 235 हिजरी भाग 5 पृष्ठ 198 किताबु फतन हदीस नंबर 19492) कि मेहदी ईसा बिन मरियम ही हैं।

4. अल-मुअजमुल औसत तिबरानी में है:

يَنْزِلُ عِيْسٰى ابْنُ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ وَعَلٰى مِلَّتِهِ اِمَامًا مَهْدِيًّا وَحَكَمًا عَدَلًا

(अल-मुअजमुल औसत तिबरानी वफात 360 हिजरी जिल्द 5 पृष्ठ 293 प्रथम संस्करण रियाज़ 1415 हिजरी 1995 ई)

यानी (दूसरे) ईसा इब्ने मरियम नाज़िल होंगे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मिसदाक (प्रारूप) बनकर और आप ही की शरीयत पर अमल करने वाले बनकर जो इमाम महदी और हकम तथा अदल होंगे।

फिर एक और बात इस तथ्य तो प्रमाणित कर रही है कि (दूसरे) मसीह ही महदी होंगे वह इस तरह कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जब आएंगे तो बतौर अल्लाह के नबी होंगे। जैसा कि मुस्लिम के हदीस में वर्णित है, चार बार,नबी अल्लाह कहा गया है। देओबंद के महान विद्वान और पूर्व मुफ्ती पाकिस्तान मुफ्ती मुहम्मद शफी साहिब का अपनी यह आस्था है कि जो आदमी यह कहता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आएंगे तो नबी नहीं होंगे वह काफिर है। अत: वह लिखते हैं कि

"सार यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उस समय भी नबुव्वत तथा रिसालत के गुण और विशेषताओं से अलग नहीं होंगे और जिस तरह उनकी नबुव्वत से इनकार पहले कुफ्र था उस समय भी कुफ्र होगा।

(मआरिफ़ुल कुरआन जिल्द 2 पृष्ठ 81)

अब जब यह साबित हो गया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम नबी अल्लाह होंगे तो कुरआन की रोशनी में हर नबी महदी होता है। महदी का मतलब ही "हिदायत प्राप्त" होता है हर नबी पहले हिदायत पाने वाला होता है अर्थात पहले महदी बनता है फिर वह हादी यानी दूसरों को हिदायत देने वाला बनता है। इसलिए कुरआन शरीफ में अल्लाह तआला कुछ नबियों जैसे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हज़रत लूत अलैहिस्सलाम, हज़रत इस्हाक अलैहिस्सलाम और हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम का उल्लेख करके कहता है:।

وَ جَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَ اِقَامَ الصَّلٰوةِ وَ اِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَ كَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

दुनिया में मज्लिसों की कई किस्में हैं या विभिन्न मज्लिसों के विभिन्न प्रयोजन होते हैं। कुछ मज्लिसें सुझावों के लिए होती हैं जिन में सांसारिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए परामर्श होते हैं। यदि लोगों की सुधार के लिए भी कोई मज्लिस लगती है, कोई बातें सोची जाती हैं तो वह भी संसारिक उद्देश्यों के लिए हैं। ख़ुदा तआला की ख़ुशी इसमें भी लक्ष्य नहीं होता लेकिन कुछ ऐसी मज्लिसें भी होती हैं जो धार्मिक उद्देश्यों के लिए हों, जो अल्लाह तआला के ज़िक्र को बढ़ाने के लिए हों, इंसान को अल्लाह तआला के निकट लाने के लिए सोचने से संबंधित हों या रूहानियत में तरक्की के माध्यम खोजने के लिए हों या इन मज्लिसों में शामिल होने वाले अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करने के लिए इस में शामिल हों अतः इन मज्लिसों का उद्देश्य केवल यह होता है कि हमारा जो काम भी हो, हम जो भी परिकल्पना करें इन का उद्देश्य अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करना हो। इन में व्यर्थ बातों से बचना हो। ऐसी मज्लिसें ख़ुदा तआला को पसंद है और इस प्रकार की मज्लिसों के परिणाम दुनिया में भी दिखाई देते हैं, और इस प्रकार की मज्लिसों में शामिल होने वालों को अल्लाह तआला मरने के बाद भी सम्मानित करता है ।

कुरआन करीम में भी अल्लाह तआला ने मोमिनों जो मज्लिसों के बारे में हिदायत फरमाई है वह यही है कि मोमिनों की मज्लसि उपद्रव से मुक्त, गुनाहों से पवित्र, रसूल की अवज्ञा से बचने वाली और तक्वा पर चलने वाली नी चाहिए लेकिन अफसोस कि आजकल मुसलमानों की अधिकतर मज्लिस इसके ख़िलाफ हैं।

मुसलमान कहला कर फिर दुनिया को अपना गंतव्य बनाने वालों और उसके पीछे दौड़ने वालों की जो हालत है यह इस बात की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है कि ख़ुदा तआला की हस्ती पर ईमान और विश्वास ख़त्म हो गया है अन्यथा अगर थोड़ी सा भी अल्लाह तआला की हस्ती पर ईमान और विश्वास होता तो न आज मुस्लिम राजनेताओं और लीडरों की यह स्थिति होती, न ही तथा कथित उलमा की यह हालत होती जो आज हमें नज़र आ रही है।

दुनिया के परामर्शों की मज्लिस में एक यू.एन.ओ की भी है। अभी पिछले दिनों ही इस का एक इज्लास हुआ है। अमेरिका के राष्ट्रपति का भाषण था इस पर यहाँ के जो पश्चिमी निबंधकार हैं विश्लेषक हैं उन्होंने भी लिखा है कि इस भाषण से शांति के स्थान पर फसाद और उपद्रव पैदा होने की अधिक संभावना है

हमें अपनी परिस्थितियों का ध्यान रखना चाहिए, याद रखें कि शैतान कभी भी सहन नहीं होगा कि वह जमाअत को तरक्की करता हुआ देखे। शैतान ने अपनी प्रकृति के अनुसार चिंता पैदा करने और हमारे भीतर फूट डालने की कोशिश करते रहना है। अतः वे लोग जो कई बार एक साथ बैठते हैं और अपने स्थानीय क्षेत्र या शहर के निज़ाम जमाअत या देश के निज़ाम के बारे में बात करते हैं, वे लोग वास्तव में कई बार शैतान के बहकावे कई बार नहीं बल्कि वास्तव में शैतान के बहकावे में आ जाते हैं। शैतान का काम क्योंकि सहानुभूति करने वाला बन कर वार करना है, इसलिए ऐसी मज्लिसों में, ऐसे लोग भी शामिल हो जाते हैं जो वास्तव में जमाअत की प्रणाली के विरोध में नहीं होते बल्कि जमाअत की भावनाओं को समझने के कारण, वे मानते हैं कि यह फित्ना पैदा करने वाला सहीह कह रहा है वह उसे फित्ना पैदा करने वाले वाला तो नहीं समझते लेकिन अपना विचार रखने वाला और सहानुभूति के रंग में बात करने वाला सही कह रहा है और सुधार की ज़रूरत है, हालांकि अगर सुधार की ज़रूरत है तो देश की प्रणाली तक और समय के ख़लीफा तक बात पहुंचाई जानी चाहिए और उसके बाद, इधर उधर मज्लिसें लगा कर बातें करना और इस प्रकार बातें करना और ऐसे अंदाज़ में बातें करना जैसे बड़े राज़ की बातें की जा रही हैं, बड़ी महत्त्वपूर्ण बातें की जा रही है ये बिल्कुल ग़लत तरीका है और गुनाह और अवज्ञा और नाफरमानी और तक्वा से दूरी की निशानियां हैं। अतः ऐसी मज्लिसों से अल्लाह तआला ने मोमिनों को भी होशियार किया है तुम इन से बचो।अल्लाह तआला जमाअत को हर आंतरिक और बाहरी फित्नों से बचाए। हमेशा और सदैव नेकी और तक्वा की मजलिस में बैठने और इसका हिस्सा बनने की तौफ़ीक़ दे न कि गुनाह और रसूल की अवज्ञा और तक्वा से दूर करने वाली मज्लिसों की।

मज्लिस के विभन्नि किस्मों और अवस्थाओे के बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सच्चे ग़ुलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रमुख उपदेश और इस बारे में जमाअत के लोगों को नसीहत।

माता-पिता को भी अपने बच्चों की मज्लिसों और सुहबतों पर नज़र रखनी चाहिए ताकि हमारे युवा नौजवानी में कदम रखने वाले बच्चे भी बुरी सुहबतों और मज्लिसों से सुरक्षित रहें और ख़ुद भी घरों में ऐसी पवित्र मज्लिसें लगानी चाहिए जो हमेशा प्रशिक्षण के दृष्टिकोण से उत्तम हों।

आज यहाँ जैसे लजना इमाउल्लाह का इज्तिमा शुरू हो रहा है। लजना को भी याद रखना चाहिए कि उनके कार्यक्रमों का अधिक हिस्सा धार्मिक और ज्ञान वर्धक होना चाहिए और शामिल होने वाली महिलाएं भी याद रखें कि वह किसी मेले में शामिल होने के लिए नहीं आईं।

स्थायी धार्मिक और ज्ञान वर्धक मज्लिसें लागएं और नियमित कार्यक्रम नहीं हो रहा तब भी अपनी मज्लिसों में बजाय इधर उधर की बातें करने और व्यर्थ बातचीत करने के रचनात्मक चर्चा और व्यर्थ बातों से हमेशा बचें और अपना समय नष्ट होने से बचाएें।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, "तुम्हारा धर्म से दूर लोगों के साथ उठना बैठना, खाना पीना तुम्हें धर्म से दूर कर देगा ।" हाँ तब्लीग़ के लिए अच्छी बातों को पहुंचाने के लिए संबंध ज़रूर स्थापित करना चाहिए इसके बिना तब्लीग़ नहीं हो सकती लेकिन इसके लिए उन्हें अपनी मज्लिसों में लाना चाहिए क्योंकि यह अच्छाई की मज्लिसें हैं फिर अपना प्रभाव छोड़ती हैं और हमारे मज्लिसों में फंगशनज़ में शामिल होने वाले कई लोग हैं जो इस बात को प्रकट करते हैं कि यहां आकर हमारी स्थिति और गुणवत्ता में बदलाव आ जाता है।

आदरणीय बिलाल अब्दुस्सलाम साहिब फिलोडलफिया(अमरीका) की वफात मरहूम का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 22 सितम्बर 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

दुनिया में मज्लिसों की कई किस्में हैं या विभिन्न मज्लिसों के विभिन्न प्रयोजन

होते हैं। कुछ मज्लिसें सुझावों के लिए होती हैं जिन में सांसारिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए परामर्श होते हैं। चाहे वह सरकार चलाने के लिए परामर्श हों या राजनेताओं की मज्लिसों के परामर्श हों या व्यवसाय करने वालों की मज्लिसें हों या फिर खेल कूद और मनोरंजन की बातें हों इसके लिए मनोरंजक मज्लिसें होती हैं उनके लिए कमेटियां बनती हैं। मनोरंजन के कार्यक्रमों को बनाने के लिए भी लोग मिल कर बैठते हैं, सोचते हैं या फिर तथाकथित ज्ञान के लिए कुछ मज्लिसें होती हैं अत: ये सब प्रकार की समितियां और कमेटियां और साथ मिलकर बैठना सांसारिक कार्यों के लिए होता है, और ख़ुदा तआला के लिए या ख़ुदा तआला की प्रशंसा के लिए या ख़ुदा तआला की निकटता प्राप्त करने के लिए मज्लिसें नही होतीं। यदि लोगों की सुधार के लिए भी कोई मज्लिस लगती है, कई बातें सोची जाती हैं तो वह भी संसारिक उद्देश्यों के लिए हैं। ख़ुदा तआला की ख़ुशी इसमें भी लक्ष्य नहीं होता लेकिन कुछ ऐसी मज्लिसें भी होती हैं जो धार्मिक उद्देश्यों के लिए हों, जो अल्लाह तआला के ज़िक्र को बढ़ाने के लिए हों, इंसान को अल्लाह तआला के निकट लाने के लिए सोचने से संबंधित हों या रूहानियत में तरक्की के माध्यम खोजने के लिए हों या इन मज्लिसों में शामिल होने वाले अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करने के लिए इस में शामिल हों अत: इन मज्लिसों का उद्देश्य केवल यह होता है कि हमारा जो काम भी हो, हम जो भी परिकल्पना करें इन का उद्देश्य अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करना हो। इन में व्यर्थ बातों से बचना हो। ऐसी मज्लिसें ख़ुदा तआला को पसंद है और इस प्रकार की मज्लिसों के परिणाम दुनिया में भी दिखाई देते हैं, और इस प्रकार की मज्लिसों में शामिल होने वालों को अल्लाह तआला मरने के बाद भी सम्मानित करता है ।

अत: एक मोमिन का काम है चाहे उसके घर की मज्लिस है, बीवी बच्चों के साथ या घर से बाहर की मज्लिस हैं, उन में यह कोशिश रहे कि हम ने अल्लाह तआला की ख़ुशी कैसे प्राप्त करनी है और अपनी रूहानियत को कैसे संभालना और बेहतर करना है और मोमिनों की अवस्था में सुधार कैसे करना है। एक मोमिन की ज़ाहिर की सांसारिक मज्लिस अल्लाह तआला के ज़िक्र से खाली नहीं होती है। सांसारिक कामों को करते हुए भी, वह व्यर्थ बातों से परहेज़ करने वाला होता है अगर दिल सांसारिक कार्यों में व्यस्त है, तो अल्लाह तआला की याद और ज़िक्र को नहीं भूलता। सांसारिक कार्यों की मज्लिसों में भी धोखा और दूसरों के अधिकारों को छीन लेने की बातें नहीं होतीं। मोमिन की मज्लिस में चाहे वह सांसारिक काम कर रहा है जैसा कि आजकल के राजनीतिक और दुनियादारों की मज्लिसों में बातें होती हैं बल्कि अल्लाह तआला का भय और तक्वा को हर बार समक्ष रखा जाता है, और यही एक मोमिन से आशा रखी जाती है कि इन बातों को हर समय ध्यान रखे। कुरआन करीम में भी अल्लाह तआला ने मोमिनों जो मज्लिसों के बारे में हिदायत फरमाई है वह यही है कि मोमिनों की मज्लसि उपद्रव से मुक्त, गुनाहों से पवित्र, रसूल की अवज्ञा से बचने वाली और तक्वा पर चलने वाली होनी चाहिए लेकिन अफसोस कि आजकल मुसलमानों की अधिकतर मज्लिस इसके ख़िलाफ हैं और मुसलमान मुसलमानों को नष्ट करने की योजना करते हैं। अल्लाह तआला तो फरमाता है

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ (अल्मुजादिल: 10)

कि ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो जब तुम परस्पर गुप्त परामर्श करो तो गुनाह सरकशी और रसूल की अवज्ञा पर आधारित सलाह न करो। हाँ अच्छाई और तक्वा के बारे में सलाह करो और अल्लाह से डरो जिसके सामने तुम इकट्ठे किए जाओगे।

लेकिन जैसा कि मैंने कहा, मुसलमान ख़ुदा तआला के इस आदेश को भूल गए, आपस की फूट की चरम हो गई। अल्लाह तआला ने मोमिनों की यह निशानी वर्णन की है कि رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ (अल्फत्ह 30) कि आपस में दया और प्यार करने वाले हैं, लेकिन यहां तो हमें वह अवस्था नज़र आ रही है कि जो काफिरों वाला नज़ारा अल्लाह तआला ने खींचा है जिनके बारे फरमाया قُلُوْبُهُمْ شَتّٰى (अल्हश्र 15)कि उन के दिल फटे हुए हैं। एक-दूसरे के साथ और ग़ैर-लोगों के साथ परामर्श होते हैं यहां तक कि गुप्त अनुबंधों के रूप में भी, तो अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करते हुए और तक्वा से दूर। अल्लाह का डर बिल्कुल नहीं रहा। अल्लाह तआला फरमाता है कि अल्लाह से डरो जिसके सामने तुम इकट्ठे किए जाओगे वहाँ सरकारें और राज्य और दौलतें और पश्चिमी शक्तियों के आशीर्वाद काम नहीं आएगा। कोई बड़ी ताकत वहां अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों की अवज्ञा और तक्वा से दूर हटने की सज़ा से नहीं बचा सकेगी।

वास्तव में तो मुसलमान कहला कर फिर दुनिया को अपना गंतव्य बनाने वालों और उसके पीछे दौड़ने वालों की जो हालत है यह इस बात की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है कि ख़ुदा तआला की हस्ती पर ईमान और विश्वास ख़त्म हो गया है अन्यथा अगर थोड़ी सा भी अल्लाह तआला की हस्ती पर ईमान और विश्वास होता तो न आज मुस्लिम राजनेताओं और लीडरों की यह स्थिति होती, न ही तथा कथित उलमा की यह हालत होती जो आज हमें नज़र आती है। बहरहाल इस युग में यह हमारा भी कर्तव्य बनता है कि हम ऐसे सारे विचारों से जहां अपने आप को शुद्ध करें और अल्लाह तआला के भय और तक्वा को अपने अंदर बढ़ाएं वहाँ जिनकी इन ग़ैर अहमदी मुसलमानों लोगों तक पहुँच है और संबंध हैं वे जहां तक अपने क्षेत्र में अपनी सीमा में मुसलमानों को समझा सकते हैं, समझाएं कि तुम्हारी यह स्थिति तुम्हें न केवल दूसरों की पूरी ग़ुलामी में ले आएगी, बल्कि ख़ुदा तआला की सज़ा पाने वाले भी बनोगे। जिस दुनिया के पीछे तुम पड़े हुए हो वह भी तुम्हारे हाथों से जाएगी और धर्म को तुम पहले ही छोड़ बैठे हो। अत: अब यह समय है कि अल्लाह तआला का भय और तक्वा दिल में पैदा करो, अन्यथा सब कुछ हाथों से जाता रहेगा।

दुनिया के परामर्शों की मज्लिस में एक यू.एन.ओ की भी है। अभी पिछले दिनों ही इस का एक इज्लास हुआ है। अमेरिका के राष्ट्रपति का भाषण था इस पर यहाँ के जो पश्चिमी निबंधकार हैं विश्लेषक हैं उन्होंने भी लिखा है कि इस भाषण से शांति के स्थान पर फसाद और उपद्रव पैदा होने की अधिक संभावना है, लेकिन यह भी उन्होंने खुल के लिख दिया कि शायद इस भाषण से सऊदी अरब और कुछ मुस्लिम देश प्रसन्न होंगे, अन्यथा यह बेहद निराशाजनक है और आग और जंग भड़काने वाली तकरीर है।

इसलिए मुस्लिम सरकारों को अल्लाह तआला के आदेशों को देखना चाहिए और सभी प्रकार की शरारत से बचना चाहिए। हालांकि, आम मुस्लिम दुनिया में क्या हो रहा है मैंने इस बारे में बात की है लेकिन हमें अपनी परिस्थितियों का ध्यान रखना चाहिए, याद रखें कि शैतान कभी भी सहन नहीं होगा कि वह जमाअत को तरक्की करता हुआ देखे। शैतान ने अपनी प्रकृति के अनुसार चिंता पैदा करने और हमारे भीतर फूट डालने की कोशिश करते रहना है। अत: वे लोग जो कई बार एक साथ बैठते हैं और अपने स्थानीय क्षेत्र या शहर के निज़ाम जमाअत या देश के निज़ाम के बारे में बात करते हैं, वे लोग वास्तव में कई बार शैतान के बहकावे कई बार नहीं बल्कि वास्तव में शैतान के बहकावे में आ जाते हैं। शैतान का काम क्योंकि सहानुभूति करने वाला बन कर वार करना है, इसलिए ऐसी मज्लिसों में, ऐसे लोग भी शामिल हो जाते हैं जो वास्तव में जमाअत की प्रणाली के विरोध में नहीं होते बल्कि जमाअत की भावनाओं को समझने के कारण, वे मानते हैं कि यह फित्ना पैदा करने वाला सहीह कह रहा है वह उसे फित्ना पैदा करने वाले वाला तो नहीं समझते लेकिन अपना विचार रखने वाला और सहानुभूति के रंग में बात करने वाला सही कह रहा है और सुधार की ज़रूरत है, हालांकि अगर सुधार की ज़रूरत है तो देश की प्रणाली तक और समय के ख़लीफा तक बात पहुंचाई जानी चाहिए और उसके बाद, इधर उधर मज्लिसें लगा कर बातें करना और इस प्रकार बातें करना और ऐसे अंदाज़ में बातें करना जैसे बड़े राज़ की बातें की जा रही हैं, बड़ी महत्त्वपूर्ण बातें की जा रही है ये बिल्कुल ग़लत तरीका है और गुनाह और अवज्ञा और नाफरमानी और तक्वा से दूरी की निशानियां हैं। अत: ऐसी मज्लिसों से अल्लाह तआला ने मोमिनों को भी होशियार किया है तुम इन से बचो।

किसी ओहदेदार के ख़िलाफ शिकायत है, या अमीर के ख़िलाफ शिकायत है तो केंद्र को शिकायत करें समय के ख़लीफा तक पहंचा दें। इस के बाद फिर जमाअत के लोगों का काम खत्म हो जाता है। अब यह समय के ख़लीफा का काम है कि किस काम को कैसे देखना है और किस प्रकार हल करना है। हां, हर एक को दुआ करते रहना चाहिए, हर अहमदी को दर्द से दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला प्रत्येक प्रकार की बुराई को जमाअत में से निकाले और तक्वा पर चलने वाले और काम करने वाले हमेशा जमाअत को मिलते रहें।

अत: इस महत्त्वपूर्ण बात को हर किसी को याद रखना चाहिए। जैसे जैसे ख़ुदा तआला जमाअत को तरक्की देता जाएगा शैतान ने भी अपना काम करना है। शैतान ने तो पहले दिन से ही अल्लाह तआला के सामने इस कथन को व्यक्त किया था और इजाज़त ली थी कि वह मोमिनों को बहकाने का काम करेगा। अहमदियत के विरोधी जहां खुलकर जमाअत के विरोध की स्कीमें बनाते हैं और बनाएंगे वहाँ सहानुभूति के नाम पर सरल लोगों को और कमज़ोर ईमान वालों को भी फित्ना पैदा करने के लिए अपना साधन बनाते हैं और बनाने की कोशिश करते हैं। अत: हर अहमदी को इस सिलसिले में सावधान रहना चाहिए। अल्लाह तआला जमाअत को हर आंतरिक

और बाहरी फित्नों से बचाए। हमेशा और सदैव नेकी और तक्वा की मजलिस में बैठने और इसका हिस्सा बनने की तौफ़ीक़ दे न कि गुनाह और रसूल की अवज्ञा और तक्वा से दूर करने वाली मज्लिसों की।

मजलिस के विभिन्न किस्मों और रूपों के बारे में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के भी कुछ उपदेश हैं और आप के सच्चे ग़ुलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहि वस्सलाम भी कुछ उपदेश हैं वे भी इस समय प्रस्तुत करता हूँ। इस बात का वर्णन फरमाते हुए कि एक मोमिन की मज्लिस कैसी होनी चाहिए और अगर इस गुणवत्ता की मज्लिस न हो जो एक मोमिन की शान के उचित है तो उस पर क्या प्रतिक्रिया प्रदर्शित करनी चाहिए।? हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहि वस्सलाम फरमाते हैं कि "हमारा धर्म तो यह है और यही मोमिन का तरीका होना चाहिए कि बात करे तो पूरी करे वरना चुप रहे। जब देखो कि किसी मज्लिस में अल्लाह और उस के रसूल पर हंसी ठट्ठा हो रहा है, या तो वहां से चले जाओ ताकि उनमें से न गिने जाओ, या फिर पूरा पूरा खोल कर जवाब दो। दो बातें हैं।"(इसके अलावा कोई नहीं, अगर एक वास्तविक मोमिन है तो) "या उत्तर या चुप रहना" (और उठ कर चले जाना।) फरमाया कि "यह तीसरा तरीका मुनाफकत है कि मज्लिस में बैठे रहना और हां में हां मिलाए जाना। दबी ज़बान से छुप कर अपनी आस्था को प्रकट करना।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 10 पृष्ठ 130 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

मज्लिस में बैठे भी रहना और कायरता दिखाते हुए या भय से उन लोगों की हाँ में हाँ मिलाते हुए, फिर दबी ज़बान से कह भी देना कि नहीं तुम यह ग़लत नहीं कह रहे हो, यह बात इस प्रकार नहीं इस तरह होनी चाहिए लेकिन खुल कर बात को व्यक्त न करना। फरमाया कि, यह जो है पाखंड है, यह ईमान नहीं है। अत: यह एक मोमिन की प्रतिक्रिया ऐसी मज्लिस में जहां धर्म पर उपहास हो रहा हो या धर्म के विरुद्ध योजना बनाई जा रही हो या बड़े तरीके से ऐसी चीज़ें हो रही हों जो दिल में शंकाए पैदा करने वाली हों। मोमिन की प्रतिक्रिया यह है कि कोई भी अल्लाह तआला और रसूल या उसकी स्थापित जमाअत की प्रणाली के ख़िलाफ बात सुनो तो सख्ती से अस्वीकार करो और बातें करने वाले को बताओ कि अगर तुम्हारे विचार में ये सब बातें सही हैं समय के ख़लीफा और सिस्टम को बताएं लेकिन इस तरह से बातें करना जायज़ नहीं है ऐसी मज्लिसों में अगर व्यक्ति बैठा रहे और दबी ज़ुबान में अस्वीकार करे और खुलकर न बोले तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यह पाखंड बन जाता है और इस से एक मोमिन को बचना चाहिए और धर्म के मामले में और निज़ाम के मामले में कभी भी निर्लज्जता नहीं दिखानी चाहिए और ग़ैरत की अभिव्यक्ति दो तरीकों से व्यक्त की गई है, या तो उसे खोल कर उत्तर दो। या उठ कर इस मज्लिस से चले जाओ।

यही तरीका अल्लाह तआला ने सिखाया और इस को स्पष्ट रूप से आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम न फरमाया है अत: एक रिवायत में आता है कि एक सहाबी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल मुझे कुछ उपदेश करें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह का तक्वा धारण करो और जब तुम किसी कौम की मज्लिस में जाओ और उन्हें अपने मिज़ाज की बातें करते हुए पाओ तो वहां ठहरो। (अर्थात कि नेकी की बातें कर रहे हैं और ग़लत किस्म की बातें नहीं कर रहे कोई फित्ना फसादा की बातें नहीं कर रहे तो वहां ठहरो) और अगर वे एसी बातों में व्यस्त हों जिन्हें तुम पसन्द नहीं करते फितना फसाद की बातें हैं तो इस मज्लिस को छोड़ दिया करो।"

(मुस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 6 पृष्ठ 368 हदीस18927 प्रकाशन अलमुल कुतुब बैरूत 1998ई)

इस बात को भी आप ने स्पष्ट बताया कि कैसी बातें एक मोमिन बन्दा को ना पसन्द होनी चाहिए। यह तो नहीं कि अपनी व्यक्तिगत पसन्द की बातें कर रहें हैं बल्कि एसी नापसन्द बातें जो निज़ाम और जमाअत के बारे में बातें हैं। फरमाया कि एसी मज्लिस को छोड़ दो और इस बारे में जैसा कि मैंने कहा नापसन्द कैसी होना चाहिए। एक रिवायत में आता है कि हज़रत अबदुल्लाह पुत्र अब्बास बयान करते हैं कि एक व्यक्ति ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा कि हम किन लोगों की मज्लिसों में बैठें।? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम उन लोगों की मज्लिसों में बैठो जिन्हें देखकर तुम्हें अल्लाह तआला याद आए और जिन से बातचीत से तुम्हारा धार्मिक ज्ञान बढ़े और जिनका पालन तुम्हें आख़रित की याद दिलाए।

(कुनज़ुल उम्माल जिल्द 9 पृष्ठ 77 हदीस 25582 प्रकाशन अलमुल कुतुब बैरूत 1998ई)

तो यह हैं वे स्पष्ट दिशानिर्देश जो एक मोमिन को अपनी मज्लिस के चुनाव के समय सामने रखने चाहिए कि उन मज्लिसों को पसंद करो जहां अल्लाह तआला का ज़िक्र हो रहा हो। अल्लाह तआला के धर्म की महानता की बातें हो रही हों जहां धार्मिक ज्ञान में भी वृद्धि हो रही हो। आज कल धार्मिक ज्ञान में वृद्धि प्रत्येक अहमदी के लिए महत्त्वपूर्ण है। तब्लीग़ के लिए दावत इलल्लाह के लिए प्रशिक्षण के लिए ये बातें आवश्यक हैं और यही बातें आख़िरत की भी याद दिलाती हैं। आदमी को इस ओर ध्यान दिलाती हैं कि केवल दुनिया की चमक-दमक ही सब कुछ नहीं है इस दुनिया की दौलतें और सुविधाएं ही सब कुछ नहीं बल्कि अल्लाह तआला की ख़ुशी एक मोमिन के लिए मूल उद्देश्य होना चाहिए।

पहली हदीस का स्पष्टीकरण हो गया है कि अगर केवल दुनियादारों की मज्लिसें हैं तो यह मज्लिसें एक मोमिन को पसन्द नहीं होनी चाहिए। ऐसी मजलिस से तुरंत उठकर आ जाना चाहिए। अगर इस तरफ हमारा ध्यान हो तो हमारे बड़े भी और हमारे युवा भी कई बीमारियों से बच जाएं। कई फ़ितनों से बच जाएं।

नौजवानों की कई मज्लिसें एक दूसरी किस्म की भी हैं। नौजवानों खासकर इसमें involve होते हैं जो fun के नाम पर होती हैं। ग़ुल गपाड़े के लिए होती हैं। युवाओं में और ये बातें पश्चिमी परिवेश के प्रभाव की वजह से कुछ हमारे युवाओं में भी पैदा हो गई हैं कि ऐसी मज्लिसओं में शामिल हो जाना चाहिए। एक मोमिन को हमेशा याद रखना चाहिए कि इस तरह के मज्लिसों से अपना जीवन बचा कर रखें और उन के अन्दर कुछ सीमाएं हैं। जमाअत में भी ऐसी घटनाएं कई बार हो जाती हैं कि बुरी सहबतें और ख़राब मजलिस के पदचिह्न पर हमारे युवा जवानी में कदम रखते ही कुछ ऐसी हरकतें कर जाते हैं जो दूसरों को नुकसान पहुंचाने वाली होती हैं। पड़ोसियों को क्षतिग्रस्त कर दिया। या राह चलते राहगीरों को नुकसान पहुंचा दिया या किसी जगह गए तो वैसे ही शरारत से किसी को नुकसान पहुंचा दिया और फिर अगर यह पता लग जाए कि यह जमाअत का व्यक्ति है तो ऐसे लोग जमाअत की भी बदनामी का कारण बन जाते हैं।

अत: माता-पिता को भी अपने बच्चों की मज्लिसों और सुहबतों पर नज़र रखनी चाहिए ताकि हमारे युवा नौजवानी में कदम रखने वाले बच्चे भी बुरी सुहबतों और मज्लिसों से सुरक्षित रहें और ख़ुद भी घरों में ऐसी पवित्र मज्लिसें लगानी चाहिए जो हमेशा प्रशिक्षण के दृष्टिकोण से उत्तम हों।

फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फरमाया कि जब कोई क़ौम मस्जिद में अल्लाह की किताब की तिलावत और आपस में शिक्षण के लिए बैठी हो तो अल्लाह तआला उन पर शान्ति उतारता है और अल्लाह की दया उन्हें ढांप लेती है और फरिशते उन्हें ढांप लेते हैं।

(सहीह मुस्लमि किताबुल ज़िक्र हदीस 6853)

अल्लाह तआला का बड़ा फज़ल है कि जमाअत को ऐसे अवसर उपलब्ध हो जाते हैं और आते रहते हैं दुनिया में हर जगह ही कई जमाअतें जलसों का आयोजन करती हैं इज्तिमा भी आयोजित किए जाते हैं उनमें ऐसे कार्यक्रम होते हैं जो प्रशिक्षण के लिए भी होते हैं, ज्ञान में भी वृद्धि के लिए हो जाते हैं। अल्लाह तआला की याद और ज़िक्र के लिए होते हैं।

आज यहाँ जैसे लजना इमाउल्लाह का इज्तिमा शुरू हो रहा है। लजना को भी याद रखना चाहिए कि उनके कार्यक्रमों का अधिक हिस्सा धार्मिक और ज्ञान वर्धक होना चाहिए और शामिल होने वाली महिलाएं भी याद रखें कि वह किसी मेले में शामिल होने के लिए नहीं आईं। अपने इज्तिमा में आने का उद्देश्य उन्हें पूरा करना चाहिए और स्थायी धार्मिक और ज्ञान वर्धक मज्लिसें लागएं और नियमित कार्यक्रम नहीं हो रहा तब भी अपनी मज्लिसों में बजाय इधर उधर की बातें करने और व्यर्थ बातचीत करने के रचनात्मक चर्चा और व्यर्थ बातों से हमेशा बचें और अपना समय नष्ट होने से बचाऐं।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फरमाया कि जो लोग किसी मज्लिस में बैठते हैं और वहाँ ज़िक्रे इलाही नहीं करते। वे अपनी मज्लिस को क़यामत के दिन हसरत से देखेंगे।

(मुस्नद अहमद बिन हंबल भाग 2 पृष्ठ 724 हदीस 7093)

अत: इज्तिमा पर आने वालों को याद रखना चाहिए कि अपने आने के उद्देश्य को पूरा करें और अपना समय हंसी ठट्ठे और व्यर्थ बातचीत में बिताने के बजाय अधिक समय ज़िक्रे इलाही और नेकी की बातें करने और सुनने में गुज़ारें ताकि हमारी मज्लिसें क़यामत के दिन कभी हसरत से देखी जाने वाली मज्लिसें न हों।

तक्वा पर चलने और तक्वा पर चलने वालों की सोहबत में समय बिताने के बारे में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें क्या नसीहत फरमाई।? एक रिवायत में आता है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम मोमिन के सिवा किसी और के साथ न बैठो और मुत्तकी के सिवा कोई तुम्हारा भोजन न खाए।

(सुनन अबी दाऊद किताबुल अदब हदीस 4832)

मनुष्यों का दुनिया में विभिन्न अलग-अलग लोगों के संपर्क रहता हैं। ग़ैर-मुसलमानों के साथ भी उठना बैठना होता है, ऐसा नहीं हो सकता कि वह व्यक्ति ग़ैर-मोमिन के साथ उठे बैठे ही न। आपके उपदेश का मतलब है कि आपकी गहरी दोस्ती अधिक उठना बैठना, तुम्हारा अधिक समय गुज़ारना, तुम्हारी मज्लिसें अधिकतर उन लोगों के साथ हों जो ईमान में जो ईमान में दृढ़ हों और धैर्य पर चलने वाले हों ताकि तुम भी भलाई और धैर्य के साथ आगे बढ़ो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं ने फरमाया "नफ्स के सुधार का एक तरीका अल्लाह तआला ने यह वर्णन की है,कि كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ (अत्तौब: 119)अर्थात जो लोग कथनी और करनी में सच्चाई पर स्थापित हैं, उनके साथ रहो। (यानी उनकी बातें भी सच्चाई पर आधारित हों। उनके कार्य भी सच्चाई पर आधारित हों और उन की हर स्थिति से सच्चाई प्रकट होती है अर्थात नेक लोग हों।) फरमाया कि इस से يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ हे ईमान वालो! तक्वा धारण करो। इस से अभिप्राय यह है कि पहले ईमान हो फिर सुन्नत के रूप में बुराई को छोड़ दो और सच्चों की संगत धारण करो। संगत का बहुत प्रभाव होता है जो अन्दर ही अन्दर होता चला जाता है।" फरमाया कि "अगर कोई हर रोज़ वैश्याओं के यहां जाता है और फिर कहता है क्या में ज़ना (व्यभिचार) करता हूं? (मैं व्यभिचार करने तो नहीं जाता) उस से कहना चाहिए हां तू करेगा और वह एक न एक दिन इसमें पीड़ित हो जाएगा क्योंकि बुरी संगत के बुरे असर होते है क्योंकि सोहबत में प्रभाव होता है उसी तरह से जो व्यक्ति शराब ख़ाना में जाता है चाहे वह कितना ही परहेज़ करे और कहे कि मैं नहीं पीता लेकिन एक दिन वह निश्चित रूप से इसे पीएगा।

(मल्फूज़ात जिल्द 6 पृष्ठ 247 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

इसलिए हमेशा बुरी संगति से बचने की आवश्यकता है। आम सांसारिक व्यवसायों में संबंध तो होता है जैसा कि मैंने कहा ग़ैरों के साथ संबंध है, लेकिन उनके संबंध में सीमाएं होनी चाहिए। यह नहीं कि उनकी व्यर्थ मज्लिसो में भी इंसान जाना शुरू कर दे। कई बुराइयां इन व्यर्थ मज्लिसों में शामिल होने से होती हैं बल्कि यहां के लोग ख़ुद इस बात का वर्णन करते हैं। हमारी कुछ औरतों से अंग्रेज़ औरतों ने वर्णन किया है कि हमारे पति अच्छे भले सज्जन हैं, लेकिन कुछ दोस्तों के कारण इन में बुराइयां पैदा हो गई हैं और व्यर्थ मज्लिसों में और गंदी मज्लिसों में जाना शुरू हो गए। तो जो लोग ग़ैर-मुस्लिम हैं, वे महसूस कर रहे हैं, इसलिए हमें बहुत ज्यादा चिंता करनी चाहिए। इस चीज़ को रोकने के आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, "तुम्हारा धर्म से दूर लोगों के साथ उठना बैठना, खाना पीना तुम्हें धर्म से दूर कर देगा ।" हाँ तब्लीग़ के लिए अच्छी बातों को पहुंचाने के लिए संबंध ज़रूर स्थापित करना चाहिए इसके बिना तब्लीग़ नहीं हो सकती लेकिन इसके लिए उन्हें अपनी मज्लिसों में लाना चाहिए क्योंकि यह अच्छाई की मज्लिसें हैं फिर अपना प्रभाव छोड़ती हैं और हमारे मज्लिसों में फंगशनज़ में शामिल होने वाले कई लोग हैं जो इस बात को प्रकट करते हैं कि यहां आकर हमारी स्थिति और गुणवत्ता में बदलाव आ जाता है।

सोहबत के प्रभाव का वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फरमाया "कि जब तक इंसान एक सच्चे और सादिक के पास बैठता है तो सच्चाई इस में काम करती है लेकिन सच्चों की संगति को छोड़ कर बुरों और दुष्टों की संगति को अपनाता है तो उनमें बुराई प्रभाव करती है।" फरमाया कि "इसीलिए हदीसों और कुरआन शरीफ में बुरी सुहबत से परहेज़ करने की ताकीद और नसीहत पाई जाती है और लिखा है कि जहां अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपमान होता हो इस मज्लिस से तुरन्त उठो अन्यथा जो अपमान सुन कर भी नहीं उठता उस की गिनती उन में से होगी।"

फिर आप फरमाते हैं कि हैं कि "सच्चों और नेकों के निकट रहने वाला भी उन में शामिल होता है, इस लिए कितना आवश्यक है कि इंसान "कूनू मा अस्सादेकीन" के आदेश पर अनुकरण करे।" फरमाया कि "हदीस शरीफ में आया है कि अल्लाह तआला फरिशतों को दुनिया में भेजता है वह पवित्र लोगों की मज्लिसों में आते हैं और जब वापस जाते हैं तो अल्लाह तआला उनसे पूछता है कि तुम ने क्या देखा? वे कहते हैं कि हम ने एक मज्लिस देखी जिस में तेरा ज़िक्र कर रहे थे लेकिन एक व्यक्ति उनमें नहीं था उन ज़िक्र करने वालों में से नहीं था लेकिन वहाँ बैठा हुआ था तो अल्लाह तआला फरमाता है कि नहीं वह भी उनमें से ही है क्योंकि ..... इस से यह स्पष्ट रूप से पता चलता है कि नेक लोगों के सोहबत से कितने लाभ हैं। बहुत हतभागा है वह व्यक्ति जो सोहबत से दूर है।

(मलुफूज़ात भाग 6 पृष्ठ 249 प्रकाशन 249 1985 ई)

अत: मोमिनों की सोहबत और मज्लिस में बैठने वाले अल्लाह तआला के फज़ल के प्राप्त करने वाले बन जाते हैं और ये वही मज्लिसें हैं जो ज़िक्रे इलाही से भरी मज्लिसें होती हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि "बहुत हैं जो कि ज़बान से तो अल्लाह तआला को स्वीकार करते हैं लेकिन अगर टटोल कर देखा तो पता होगा कि उनके अंदर नास्तिकता है क्योंकि दुनिया के कामों में जब व्यस्त होते हैं तो ख़ुदा तआला के क्रोध और उसकी महानता को बिल्कुल भूल जाते हैं। इसलिए यह बात बहुत महत्वपूर्ण है कि तुम लोग दुआ के माध्यम से अल्लाह तआला से अनुभूति प्राप्त करो। इस के बिना पूर्ण विश्वास प्राप्त नहीं हो सकता और वह उस समय प्राप्त होगा जब यह ज्ञान हो कि अल्लाह तआला से संबंध विच्छेद करने में एक मौत है।" फरमाया कि "गुनाह से बचने के लिए जहां दुआ करो वहाँ साथ ही उपाय के सिलसिले को हाथ से न छोड़ो और सभी महफ़िलें और मज्लिसें जिनमें शामिल होने से गुनाह की तहरीक होती है उन्हें छोड़ दो और साथ ही दुआ भी करते रहो और ख़ूब जान लो कि इन आपदाओं से जो कज़ा तथा कदर की तरफ से इंसान के साथ पैदा होती हैं जब तक ख़ुदा तआला की मदद साथ न हो कभी मुक्ति नहीं होती।" फरमाया "नमाज़ जो कि पांच बार अदा की जाती है इस में भी यही इशारा है कि अगर वह नफ्सानी भावनाओं और विचारों से उसे नहीं बचाएगा तब तक वह सच्ची नमाज़ हरिगज़ नहीं होगी। नमाज़ का अर्थ टकरें मारने और रस्म और आदत के तौर पर अदा करने के हरगिज़ नहीं। नमाज़ वह चीज़ है जिसे दिल में अनुभव कर के रूह पिघल कर भयानक अवस्था में अल्लाह तआला के दरबार में गिर पड़े।" फरमाया "जहां तक शक्ति है वहाँ तक अपने दिल में नर्मी पैदा करने की कोशिश करे और विनय से मांगे कि दुस्साहस और गुनाह जो अंदर रूह में हैं वे दूर हों इसी प्रकार की नमाज़ बरकत वाली होती है। अगर वह उस पर दृढ़ता अपनाएगा तो देखेगा कि रात या दिन एक नूर उसके दिल पर गिरा है और नफ़्स अम्मारह की धृष्टता कम हो गई है। जैसे अजगर में एक कातिल ज़हर है उसी तरह नफ्स अम्मारह में कातिल ज़हर है और जिसने इसे बनाया उसी के पास इसका इलाज है।

(मल्फूज़ात भाग7 पृष्ठ 123 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

यानी ख़ुदा तआला के पास ही बुराई को दूर करने का उपाय है इसलिए इसके आगे झुको इससे मदद मांगो कि दुनिया और उसके बुरे प्रभावों और बुरी मज्लिसों से और उनके प्रभावों से हमेशा सुरक्षित रखे।

एक रिवायत में आता है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दिनचर्या थी कि मजलिस बर्खास्त करते समय उठते हुए आप यह दुआ करते थे कि हे अल्लाह तू पवित्र है और तेरी प्रशंसा की मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। मैं तुझ से माफी मांगता हूं और मैं तेरी ओर मुड़ता हूं।

(सुनन अबी दाऊद हदीस 4859)

फिर एक अवसर पर आपने फरमाया कि कुछ शब्द ऐसे हैं जिसने भी इन्हें अपनी मज्लिस से उठते हुए तीन बार पढ़ा तो अल्लाह इनके कारण उसके गुनाह जो उसने वहां किए होंगे उन्हें ढक देगा और जिसने यह शब्द किसी भलाई की मज्लिस और ज़िक्रे इलाही की मज्लिस में पढ़े तो उनके साथ उस पर मुहर कर दी जाएगी और वह शब्द हैं यह कि سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ कि हे अल्लाह तू अपनी तारीफ के साथ पवित्र है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं मैं तुझ से माफी को मांगता हूँ और तेरी ओर ही लौटता हूँ। (सुनन अबी दाऊद हदीस 4857)

अत: मुझ में से जो कुछ बातें अप्रिय हो जाती हैं उनके बुरे असर से भी सुरक्षित रख। और फिर यह दुआ अप्रिय बातों के असर से सुरक्षित रखती है और इंसान को नेक मज्लिस के असर से अधिक से अधिक लाभ उठाने का कारण बनती है।

जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि तब तक ख़ुदा तआला की मदद साथ न हो हरगिज़ रिहाई नहीं होती। इस लिए प्रत्येक समय अल्लाह तआला की मदद मांगते रहना चाहिए। अल्लाह तआला हमें तौफीक दे कि हम हमेशा बुरी मज्लिस से बचने वाले हों और कभी अनजाने में शामिल हो जाएं तो उस के बुरे प्रभाव से बचने वाले हो जाएं। हमेशा पवित्र मज्लिसों की तलाश में रहें और उन में बैठने वाले हों और उन पवित्र मज्लिसों के पाकीज़गी और अल्लाह तआला के फज़ल से फैज़ पाने वाले हों। अल्लाह तआला हमें हमेशा शैतान के हमले से बचाए और रहम और माफी का सुलूक फरमाए और हमें हमेशा जमाअत के निज़ाम और ख़िलाफत से जोड़े रखे और फित्ना फैलाने वाले के फित्ना की बुराई

से हमें महफूज़ रखे।

नमाज़ के बाद मैं एक नमाज़े जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा जो हमारे अफ्रीकन अहमदी भाई आदरणीय बिलाल अब्दुस्सलाम साहिब का है जो फ्लैडलफिया अमरीका में रहते थे। 13 सितंबर को उनकी वफात हो गई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। यह इस वर्ष जलसा सालाना यू.के में भी आए थे और पहले दिन जब पैन अफ्रीकन एसोसिएशन का कार्यक्रम जारी था अचानक उन्हें फालिज(पक्षघात) का हमला हुआ। उन की तबीयत खराब हुई तुरंत उन्हें अस्पताल ले जाया गया। जहां कुछ दिन इलाज होता रहा और तबीयत अच्छी हो गई। मुझे मिलने भी आए। इस के बाद मैं दो बार मिला हूं। ज़ाहिर में ठीक लग रहे थे इस के बाद वापस अमरीका चले गए।

आप 1 9 34 ई में फ्लोरिडा में पैदा हुए। छह साल की उम्र में उनके माता-पिता की मृत्यु हो गई। आठ साल की उम्र में वह बोर्डिंग गए। जहां बाइबल के तालीम हासिल की फिर दूसरी नौकरियां कीं और कुछ समय के लिए सेना में शामिल हो गया। 1 9 57 ई में मिनस्टर आफ गास्पल बन गए। लेकिन उन्हें ईसाई धर्म की कुछ मान्यताओं से मतभेद रहा। 1 9 60 ई में उन की एक सुन्नी मुस्लिम से मुलाकात हुई जिसने उन्हें जमाअत का प्रकाशित कुरआन करीम दिया। आपने उस व्यक्ति से पूछा कि ये लोग कौन हैं जिन का यह कुरआन करीम है उस ने कहा कि यह मुसलमान तो नहीं हैं मगर इनकी किताबें अच्छी हैं। तो आप ने उस आदमी से पता मालूम कर के एक अहमदी का पता किया उनकी दुकान पर पहुंचे वहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर देखी और पूछने पर बताया गया कि यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और मसीह मौऊद और इमाम महदी हैं। बहरहाल इसके बाद आपने अहमदियत को स्वीकार किया और फिर अहमदियों के साथ मिल कर फ्लेडल्फ़िया में तब्लीग़ का काम करते रहे।

बिलाल अब्दुस सलाम साहिब को कुरआन सीखने का भी बड़ा शौक था। वह चार घंटे की दूरी तय करके हर दूसरे इतवार को पिट्सबर्ग आया करते थे ताकि कुछ सीख सकें और इसी तरह आप सदर जमाअत Fledalfia और राष्ट्रीय कार्यकारिणी वक्फे नौ और तरबियत नौ मुबाईन के सैक्रेटरी भी रहे। आप ज़िन्दगी वक्फ कर के कुछ समय बाल्टी मूर में जमाअत के आरज़ी मुबल्लिग़ के रूप में काम भी करते रहे। और इस के बाद भी उन्होंने तब्लीग़ का सिलसिला जारी रखा। ख़िलाफत से बहुत अधिक मुहब्बत करने वाले थे जमाअत के निज़ाम के पाबन्द और उच्च स्तर की पाबन्दी करने वाले थे। हमेशा ख़लीफाओं के वर्णन पर रोने लग जाया करते थे। 1975 ई में उन को जलसा सालाना कादियान में भी शामिल होने की तौफीक़ मिली थी। Fledalfia में मस्जिद निर्माण हो रहा है उसके लिए आप की बड़ी इच्छा भी थी और कोशिश भी करते रहे और निर्माण के दौरान दैनिक पूरा दिन वहाँ केबिन में बिताते और दुआ करते थे और हमेशा इस कोशिश में होते थे कि मस्जिद जल्दी से जल्दी निर्माण हो जानी चाहिए। उम्मीद है कि इन्शा अल्लाह जल्द बन जाएगी। उनकी पत्नी श्रीमती ओस्टस्टन यह पादरी हैं। वह अहमदी नहीं थी लेकिन उन्होंने हमेशा उन्हें अच्छी तरह से व्यवहार किया। आप के दो बेटे और दो बेटियां हैं। एक बेटा उम्र अब्दुस सलाम साहिब ने 1993 में बैअत की थी और जमाअत में प्रवेश किया यह अहमदी हैं बाकी नहीं।

अब्दुल्ला दीबा साहिब वहां अमरीका में आज कल मुबल्लिग़ हैं। वह लिखते हैं कि जमाअत अमेरिका के निहायत ही सक्रिय सदस्य थे। निहायत ख़ुश मिज़ाज हर दिल अज़ीज़ और प्यार करने वाले ईमानदार इंसान थे। अक्सर लोगों के काम आया करते थे। युवाओं के साथ एक विशेष संबंध था, हमेशा उन्हें प्रशिक्षित करने और उन्हें सामाजिक बुराइयों से बचाने की कोशिश करते थे। कई युवाओं के जीवन को प्रभावी ढंग से बदल दिया और उन्हें सीधे रास्ते पर चलने की नसीहत करते रहते थे। ऐसा कहा जाता है कि युवाओं की एक बड़ी संख्या उनके प्रशिक्षण के कारण जमाअत और समुदाय का काम करने वाला हिस्सा बन गई है। जब आप अस्पताल में बीमार थे, तो आपने कहा कि उन के सिर के पास कुरआन करीम का एक नुस्ख़ा हमेशा मौजूद रहे और जब यहां वह बीमार थे तो उन्होंने कहा कि अल्लाह तआला ने मुझे एक नया जीवन दिया है इसलिए कुछ अधूरे काम हैं उन को पूरा करना चाहता हूं। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है कि इन का ख़िलाफत से बहुत वफादारी का संबंध था। जब भी मिलते थे। हमेशा चेहरे पर एक अजीब मुस्कुराहट होती थी और एक ईमानदारी और वफादारी उन की आंखों से टपक रही होती थी।

अल्लाह तआला उन के स्तर उंचे करे उन के साथ क्षमा और माफी का व्यवहार करे और उन के बाकी के बच्चों को भी अहमदियत स्वीकार करने की तौफीक़ प्रदान करे। ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

(अल अनबियाय: 21/74) यानी हम ने उन्हें ऐसे इमाम बनाया जो हमारे हुक्म से हिदायत देते थे और हम उन्हें अच्छी बातें करने और नमाज़ की स्थापना और ज़कात देने की वह्यी करते थे।

इस प्रकार अल्लाह तआला बनी इस्राईल के विषय में फरमाता है:

وَ جَعَلْنَا مِنْهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا

(अलसिजदा: 32/25) यानी हम ने बनी इस्राईल में से ऐसे इमाम बनाए जो हमारे आदेश से हिदायत देते थे।

इस आयत से साबित हो रहा है कि इस्राईल में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद ख़ुदा तआला ने जो नबी भेजे इन सभी को इस आयत में इमाम महदी कहा जा रहा है। "आइमा:" इमाम का बहुवचन है और यहदून बेअमरेन से प्रमाणित हो रहा है कि वह पहले ख़ुद हिदायत पाते हैं फिर हादी बनते हैं। इस संबंध में प्रत्येक नबी कुरआन के निकट महदी है इसलिए कहना कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जब आएंगे उस समय नबी तो होंगे लेकिन इमाम महदी नहीं होंगे। यह कुरआन के निकट ग़लत विचार है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि: नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों से भी यही साबित होता है कि आने वाला मसीह इसी उम्मत से होगा, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं لَا الْمَهْدِيُّ اِلَّا عِيْسٰى ईसा के अतिरिक्त और कोई महदी नहीं। दूसरे तरफ फरमाते हैं कि كَيْفَ اَنْتُمْ اِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْيَمَ فِيْكُمْ وَاِمَامُكُمْ مِنْكُمْ (बुख़ारी किताबुल अंबिया नूज़ूल ईसा इब्ने मर्यम) तुम्हारी क्या अवस्था होगी जब तुम में इब्ने मर्यम नाज़िल होगा और तुम्हारा इमाम तुम्हीं में से होगा। इन दोनों उपदेशों को मिलाकर देखो तो साफ मालूम होता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मसीह के समय उन के अतिरिक्त और कोई महदी नहीं होगा और वह इस उम्मत के इमाम होंगे लेकिन इसी उम्मत में से होंगे कहीं बाहर से न आएंगे। अत: यह विचार कि मसीह अलैहिस्सलाम कोई अलग अस्तित्व होंगे और महदी अलग अस्तित्व, झूठा विचार हौ और "लल महदी इल्ला ईसा" के ख़िलाफ़ है। मोमिन का यह काम है कि वह अपने आका की बातों पर विचार करे और जो अन्तर इसे ज़ाहिर में दिखे उसे अपने अक्ल से दूर करे। अगर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बार यह फरमाया है कि पहले महदी प्रकट होंगे फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम नाज़िल होंगे जो महदी के अनुकरण में नमाज़ अदा करेंगे,और दूसरी बार यह फरमाया कि मसीह अलैहिस्सलाम ही मसीह हैं तो क्या हमारा यह काम है कि आप के कथन को रद्द करें अगर दोनों कथनों में कोई समरूपता की अवस्था है तो उस को धारण करें। और अगर कोई थोड़ी से कोशिश भी करे तो दोनों बातों में समरूपता का तरीका यही है कि "लल महदी इल्ला ईसा" दूसरी हदीस की व्याख्या है अर्थात पहले रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो मसीह अलैहिस्सलाम के नुज़ूल की ख़बर ऐसे शब्दों में दी थी जिससे यह संदेह पड़ता था कि दो अलग अलग अस्तित्व हैं इस को "लल महदी इल्ला ईसा" वाली हदीस से खोल दिया लेकिन किसी रसूल का स्थान उसे नहीं दिया जाएगा लेकिन बाद में ईसा पुत्र मर्यम की भविष्यवाणी भी उस के लिए पूरी की जाएगी और वह ईसा होने का दावा करेगा इस प्रकार से मानो उस के दो विभिन्न पदों को प्रकट किया गया है अर्थात पहले साधारण रूप से सुधार का दावा होगा और फिर मसीह का दावा होगा और भविष्यवाणियों में इस प्रकार की बात प्राय: होती है बल्कि इस प्रकार की उपमाएं यदि भविष्यवाणियों से अलग कर दी जाएं तो इस का समझना कठिन हो जाए। (शेष.....)

(अनुवादक शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अप्रैल 2017 ई. (भाग -15)

☆ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की राष्ट्रीय मज्लिसे आमला (कार्यकारिणी) स्थानीय और क्षेत्रीय अमीरों और सभी जमाअत के सदरों के साथ मीटिंग

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

23 अप्रैल 2017 (दिन रविवार) (शेष....)

* एक वक्फे नौ ने निवेदन किया कि बच्चों के जन्मदिन के अवसर पर, उनके परिवार वाले केक आदि या अन्य चीज़ों को पैक किया जाता है और कक्षा के बच्चों को वितरित किया जाता है। इस मामले में, हमें क्या करना है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, अगर वे स्कूल में टाफियां, गोलियां, चॉकलेट या केक आदि बांटते हैं, तो आप भी बांट दिया करें लेकिन यह भी बच्चों को बताएं कि हमारा जन्मदिन यह है कि हम भी ग़रीबों को दे देते हैं। बच्चे से कुछ सदका दिलवाएं और उसे कहें कि दुआ करें कि अल्लाह तआला मुझे नेक बनाए। लेकिन घर में जन्मदिन नहीं मनाना। यदि स्कूल में बच्चों में खिलौने, केक आदि साझा करते हैं, तो आपको यह भी करना चाहिए। इसमें कोई नुकसान नहीं है। एक विशेष समारोह के रूप में जन्मदिन मनाने की कोई ज़रूरत नहीं है। लेकिन यदि एक दो बार बच्चे वर्ष में स्कूल में बांटते हैं, तो आप भी अपने बच्चों को दे सकते हैं, तो कोई नुकसान नहीं होता है, क्योंकि दूसरे बच्चे पूछते हैं कि आपका जन्मदिन कब होता है? यह कोई इतना बड़ा शरई मस्ला नहीं है कि इस पर प्रतिबंध बहुत जरूरी है लेकिन इस मामले में बहरहाल महत्वपूर्ण है कि फिजूलखर्ची न की जाए और घरों में दावत न की जाएं और घरों में जन्मदिन न मनाए जांए। ऐसे अवसरों पर, अपने बच्चों से कहें कि तुम अपनी कक्षा के बच्चों के लिए टाफी, टैबलेट, चॉकलेट या केक आदि ले जाओ लेकिन आपको पता होना चाहिए कि आपको अपने जन्मदिन पर गरीबों की मदद करना है। यही कारण है कि कुछ सदका दें, कुछ दान दो और दुआ करो। अगर आप ये सब करते हैं, तो इसमें कोई नुकसान नहीं होता है। लेकिन बहर हाल ज़बरदस्ती बोझ डालने के लिए नहीं।

* एक वाक्फा नौ ने तीसरे विश्व युद्ध के संदर्भ में सवाल किया कि तीसरे विश्व युद्ध के बाद सब कुछ ख़त्म हो जाएगा फिर जमाअत का एक दूसरे के साथ कैसे सम्पर्क होगा?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: कौन कहता है कि सब कुछ खत्म हो जाएगा? तीसरा विश्व युद्ध तो होगा, लेकिन बहुत से लोग बच भी जांएंगे। सब कुछ खत्म नहीं होगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

आग है पर आग से वह सब बचाए जाएंगे
जो कि रखते हैं ख़ुदाए ज़ुल अजायब से प्यार

तो अल्लाह तआला से प्यार करो, अल्लाह तआला से संबंध रखें तो यह आग जो युद्ध की आग इससे बचाया जाएगा हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: युद्ध के बाद जो लोग बच जाएंगे उन्हें कम से कम यह पता होगा कि उन्हें पहले से ही बताया हुआ था कि युद्ध होना है इसलिए इसके बाद कई लोग इस्लाम में भी प्रवेश करेंगे। इंशा अल्लाह तआला बाकी संपर्क सैटेलाइट फोन के माध्यम से हो जाएगा। प्रत्येक जमाअत में एक सैटेलाइट फोन रख लें तो यह ठीक है।

* एक वाक्फे नौ ने सवाल किया कि लड़कों की महंदी नहीं होती लेकिन महंदी वाली रात उन की बहने या भाभियां मिलकर गाने गा सकती हैं या नहीं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मुझे बताएं,शरीयत में कहां लिखा है कि महंदी करनी चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लिखा है और शरीअत की दृष्टि से भी केवल एक फन्कशन ज़रूरी है और वह वलीमा का फंकशन है इस अवसर पर लड़कियां अगर रौनक लगा कर गाना आदि करना चाहती हैं तो कर सकती हैं। इस तरह से अगर निकट के रिश्तेदारों ने यदि कोई रौनक आदि लगानी है तो कर लें इस में कोई हर्ज नहीं है इस के करने में कोई हर्ज नहीं है लेकिन कोई एसी भी ज़रूरी चीज़ नहीं हैं कि लाज़मी है। परन्तु इतनी सख़्ती की भी ज़रूरत नहीं है। अगर घर में बैठ कर बहन भाई या मां बाप या कुछ समीप के रिश्तेदार मामू फूफिया आदि इकट्ठा हो जाती हैं और रौनक लग जाती है तो कोई हर्ज नहीं।

* एक वाक्फा नौ ने अर्ज़ किया कि हमारे क्षेत्र की एक लजना ने बताया कि वह किसी डॉक्टर के पास गई थीं और डॉक्टर ने आगे हाथ बढ़ा दिया था जिस पर उन्होंने डॉक्टर से हाथ मिला दिया था। जिस पर मैंने उन्हें कहा कि हाथ मिलाना तो मना है इस पर,उस आन्टी ने उत्तर दिया कि न तो उसके दिल में कोई बुराई थी और न ही मेरे दिल में कोई बुराई है। इसलिए हाथ मिलाने से कुछ नहीं होता ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यह ग़लत है। यह कहां लिखा है कि दिल में कोई बुराई न हो तो ऐसा कर सकते हैं? मैंने पहले ही कहा है कि इस्लाम के आदेश हर संभव चीज़ को कवर करते हैं। सौ में से अस्सी नव्वे प्रतिशत पुरुष तथा औरतें जो हाथ मिलाती हैं उनके दिल में बुराई नहीं होती है, लेकिन फिर भी अल्लाह तआला ने उन्हें मना कर दिया है। नऊज़ बिल्लाह क्या हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के दिल में औरतो के लिए कोई बुराई थी।? या औरतों के दिल में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के लिए कोई बुराई है? क्या एसी मिलाते से लेकिन आपने कहा, हम महिलाओं के हाथों से बैअत नहीं लेते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की कई घटनाएं हदीसों से प्रमाणित हुई हैं। बैअत एक शुद्ध विधि है और फिर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के स्थान को देखें। फिर भी, इस के बावजूद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया "मैं महिलाओं से हाथ नहीं मिलाता।" तो उसके बाद बाकी बुराई क्या रह गई? ये सभी बहाने हैं लोग इस समाज में आ कर डर जाते हैं। बजाए इस के कि अपनी शिक्षा बताएं और अपना ईमान मज़बूत उन के माहौल में ढल जाना वैसे ही बुज़दली है। तो जिस औरत ने भी ऐसा किया है वह बहुत बुज़दिल औरत है

इसी वाक्फा नौ ने कहा कि मेरा दूसरा सवाल पर्दा के बारे में है कुछ औरतों से जब कहा जाए कि पर्दा करें तो कहते हैं कि यहां कोई अहमदी नहीं है इसलिए पर्दा की ज़रूरत नहीं है इस पर

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया:, क्या पर्दा केवल अहमदियों से ही करना है? उन्हें बताएं कि यह कहीं नहीं लिखा कि बस अहमदियों से पर्दा करें बल्कि जब पर्दा का आदेश आया तो इस से पहले एक यहूदी ने एक मुसलमान के साथ बड़ी गलत हरकत की थी कि उस की चादर आदि खींचने की कोशिश की थी। वैसे तो अल्लाह तआला ने पर्दा का आदेश देना ही था, लेकिन यह भी एक कारण बन गया था। अत: यह कहीं भी नहीं लिखा जाता है कि तुम ने अहमदियों से ही पर्दा करना है। क्या ख़तरा केवल अहमदियों से ही है? ग़ैर अहमदियों से कोई ख़तरा नहीं है? कुरआन में कहीं इस का उल्लेख नहीं है कि तुम ने केवल मुसलमानों से पर्दा करना है कुरआन में यह लिखा है कि अपनी चादरों को अपने सिरों पर डाल दो और अपनी ओढ़नियों से अपनी छाती कवर करो। इसलिए यदि वे ऐसा कहती हैं, तो वह ग़लत कहती हैं। वे अपनी नई शरीयत को फैला रहे हैं आप लोग वाक्फाते नौ इसलिए हैं कि ऐसी महिलाओं से कहें कि अपनी बिदअतें पैदा न करें और अपनी अपनी शरीयतें न फैलाओ। आप ने उन लोगों का सुधार करना है। मेरे सामने 230 जो वाक्फाते नौ जो बैठी हैं यदि ये सभी सुधार के लिए खड़ी हो जाएं हैं, तो अपने आप ही लोगों के दिमाग़ ठीक हो जाएंगे।

* पर्दे के संबंध में एक और सवाल किया कि जब हम किसी नौकरी के लिए

आवेदन करती हैं, तो यह अक्सर पहली शर्त है कि यदि आप ने स्कार्फ लेने हैं तो आप यह नौकरी नहीं कर सकती। तो इस संदर्भ में हमें क्या करना चाहिए?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आप देख लें कि आपने जो धर्म को दुनिया पर प्राथमकिता देने का वादा किया है उस को पूरा करना है या नहीं? यह सवाल अपने ज़मीर से पूछें कि क्या नौकरी ज़रूरी है? अगर भूखी मर रही हैं तो फिर सूअर खाने की भी इजाज़त है अगर तो भूखे नहीं मर रहे और कोई गुज़ारा हो रहा है तो कोई कारण नहीं कि केवल नौकरी के लिए आप अपने पर्दे छोड़ दें हां अगर कोई भूखा मर रहा है गुज़ारा नहीं हो रहा और कोई रास्ता नहीं है तो फिर ठीक है कि नौकरी के समय पर्दा उतार लिया परन्तु वहां से निकलते ही शीघ्र ही पर्दा होना चाहिए। या कुछ व्यवसाय हैं, वैज्ञानिक हैं या चिकित्सक हैं जिनके पास अपने वस्त्र हैं जो उन्हें पहनने पड़े हैं। वहां तो बुर्का पहन कर नहीं जा सकतीं। प्रयोगशाला है या ऑपरेशन थियेटर है, उन्हें विशेष कपड़े पहनना चाहिए, लेकिन फिर इस के बाद पर्दा होना चाहिए।

* एक वाक्फा नौ ने कहा कि मेरे पास दो बच्चे हैं जिनको एक बीमारी है जिस के बारे में कहा जाता है कि यह कजन मैरेज का कारण है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यही बीमारी जब यूरोप में अन्य लोगों को होती है जोतो क्या वह कज़नों की शादी के कारण होती है। यह रोग जर्मनी में भी है ये लोग ग़लत कहते हैं अगर कुरआन कहता है कि शादी हो सकती है और कई पीढ़ियों से हो रही है। मेरे परिवार में कई शादियां हैं और अल्लाह तआला की कृपा से सभी ठीक हैं।

* एक अन्य वाक्फे नौ पर्दे के संदर्भ में कहा है कि जलसा गाह में बुर्के बेचे जाते हैं इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि जो बुर्के सेल होते हैं उन में बुर्का कम और फैशन अधिक होता है अगर आप का यही सवाल है तो फिर सदर लजना को चाहिए कि मार्किट से ऐसे बुर्कों को ग़ायब करवा दें। एसे लोगों को स्टाल ही न लगाने दें।

* एक अन्य वाक्फे नौ ने प्रश्न: किया कि क्या हम कब्रिस्तान में जाकर किसी की कब्र पर दुआ कर सकते हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कहा: तुम क्यों नहीं कर सकते? किसी भी परिचित या अहमदी की कब्र पर दुआ की जा सकती है। एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिए दुआ कर सकता है। इसमें कोई नुकसान नहीं है।

इसी वाक्फा ने दूसरा सवाल किया कि एक जर्मन महिला हमारे घर में आती है और पूछती है कि अगर ख़ुदा तआला को इतना मानवता से प्यार है, तो अफ्रीका में यह क्यों है कि लोग भूखे हैं और बीमारी से मर रहे हैं? वहां अल्लाह तआला का प्यार कहाँ है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अल्लाह तआला ने दो कानून बनाए हैं। एक कानून कुदरत है और एक कानूने शरीयत है। अल्लाह तआला का प्यार भी है और अल्लाह तआला की रहमत भी है। अगर कोई काम नहीं करेगा या निकम्मा है, तो उस की यही अवस्था होगी। लोग तो यहाँ यूरोप में भी बीमार होते हैं। तो क्या वह महिला यह कहेगी कि अल्लाह तआला यहाँ भी लोगों से प्यार नहीं करता? लोग यहाँ भी मर जाते हैं तो क्या अल्लाह तआला उनसे प्यार नहीं करता? कई तूफान आते हैं, अमेरिका में hurricanes आते हैं। दुनिया में भूकंप आते हैं, उनसे भी लोग मरते हैं। तो क्या इसका मतलब है कि अल्लाह तआला प्यार नहीं करता? उस पर वाक्फा नौ ने अर्ज़ किया कि वह महिला कहती है कि वहाँ अफ्रीका में दो साल हो गए हैं बारिश नहीं हुई। उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: दुनिया में अकाल तो आते हैं। इसीलिए अल्लाह तआला ने हमें इस्तस्का की दुआ सिखाई है। अफ्रीका में कई स्थानों पर जहां जमाअत हैं वहाँ से कई लोग मुझे लिखते हैं कि बारिश नहीं हुई, दुआ करें। तो उनसे यही कहता हूं कि बाहर निकल कर नमाज़े इस्तस्का पढ़ो और दुआ करो। और जब उन्होंने दुआ की तो वहाँ बारिश भी हुई और अल्लाह तआला की कृपा से स्थिति ठीक हो गई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: कुछ तो बारिश न होने के कारण भी है लेकिन कुछ अपने दोष भी हैं कि काम नहीं करते, निकम्मे बैठे रहते हैं। सिर्फ दूसरी क़ौमों से मांग कर खाने की आदत है इसी लिए अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को कहा है कि जो मेरी रहम विशेषण है वह जो मेरी रहमत की गुण है वह मेरे बन्दों को भी अपनानी चाहिए।

इसलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया सदका करो और गरीबों का ख्याल रखो। ये क़ौमें इतनी अधिक फसलें, मक्खन, दूध और घी जो बर्बाद देते हैं और फेंक देते हैं उन्हें चाहिए कि वे इस अफ्रीकी देशों में भेजा करें ताकि उनकी भी सेवा हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: कानून प्रकृति के तहत अकाल के साल भी आते हैं। कुछ परीक्षाएं होती हैं और लोग इसमें मर जाते हैं। लेकिन अगर अल्लाह तआला ने किसी को परीक्षा में डाला है तो वास्तविक जीवन तो मरने के बाद की है। मूल रहम तो अल्लाह तआला का अनन्त जीवन में होता है। क्या पता कि अल्लाह तआला उन सारों को बख्श दे और उन से हिसाब न ले। यह भी भी अल्लाह तआला का रहम ही है। हम तो इसी बात पर विश्वास रखते हैं कि वास्तविक जीवन आख़िरत का जीवन है। जब वही वास्तविक जीवन है तो अल्लाह तआला रहम और माफी ऐसे लोगों को इस जीवन में अपना नज़ारा दिखा दिखाएगी।

* एक वाक्फा नौ ने सवाल किया कि जब घर में एक महिला और एक मर्द तो इमाम आगे खड़े होकर नमाज़ पढ़ाएगा या एक ही पंक्ति में खड़े होंगे?

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया अगर पत्नी हो या बहन भाई हो। जो भी पुरुष होगा वह आगे खड़ा हो जाएगा और महिला पीछे खड़ी होगी। लेकिन कुछ परिस्थितियों में साथ भी खड़े हो जाते हैं। जैसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कई बार जब तबीयत ज्यादा ख़राब होती थी और घर में नमाज़ पढ़ते थे तो हज़रत अम्माजान रज़ियल्लाहो अन्हा को साथ भी खड़ा कर लेते थे। आमतौर तो पीछे खड़ी होती थीं लेकिन कई बार यह कहकर कि मुझे चक्कर आ रहे हैं साथ भी खड़ा कर लिया करते थे ताकि नमाज़ पढ़ाते समय अगर चक्कर आएं तो गिर न जाउं। इसलिए सहारे की जरूरत है। सैद्धांतिक निर्णय तो यही है कि पीछे खड़े होना है लेकिन अगर कोई मजबूरी है तो इस्लाम आसानी का धर्म है, चरमपंथ धर्म नहीं। अगर मजबूरी है तो साथ भी खड़ा हुआ जा सकता है। *

इसी वाक्फा नौ ने आखिरी सवाल करते हुए कहा कि अगर माँ चाहती हो कि बच्चा वक्फ करना है लेकिन घरवाले न मानें तो इस मामले में क्या करना चाहिए? उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इस मामले में दुआ करो। पति को समझा लो। दोनों की इच्छा से ही वक्फ होना चाहिए। उस पर वाक्फा नौ ने अर्ज़ किया कि मेरे दो बच्चे वक्फ नौ में शामिल हैं लेकिन एक शामिल नहीं है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जो वक्फ नौ में शामिल नहीं है उस का प्रशिक्षण ऐसा करो कि बड़ा होकर ख़ुद ही वक्फ कर दे। ख़िदमत ही करनी है, वह बड़े होकर भी कर सकता है। मैं भी तो वक्फ नौ नहीं था लेकिन मैंने वक्फ कर दिया था।

वाकफ़ात नौ (लजना) की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ यह कक्षा एक बजकर 50 मिनट पर समाप्त हुई।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद हॉल में पधारे और कार्यक्रम के अनुसार समारोह आमीन हुआ।

आमीन की तकरीब (समारोह)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने निम्न 30 बच्चों और बच्चियों से कुरआन की एक एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई। शाह ज़ैब हसन, तौहीद हैदर अहमद, राहील अहमद जावेद, आरश राणा, अनसार अहमद,ज़ाफिर अहमद, फारान तैयब, सअदुर्रहमान अनवर, इब्राहीम अहमद अताउर्रहीम, अता उलहसीब मलिक, शायान अहमद सालेह

लाइबह शम्स, मदीहह अहमद, मायरह अहमद, ईशा अफजाल शाह, फरीहा नईम, आबिदा भट्टी, अतयतुल हकीम ज़ुबदा भट्टी, सोसन अहमद, आएलीन ज़ोहा जावेद, शाफिया अहमद, अतयतुल हई नुग़माना बट, हिबतुल मतीन ख़ान, मलीहा महमूद, हफ्साह ग़फ्फार, मनाहिल वसीम जंजूअ, सरवत कलीम जंजूए, अमतुस्समीइ मुहम्मद, ईशा अहमद

आमीन की तकरीब (समारोह) के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने नमाज़े ज़ोहर व अस्र प्रस्तुत करके पढ़ाएं। दुआ भुगतान के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

राष्ट्रीय मज्लिसे आमला (कार्यकारिणी) स्थानीय और क्षेत्रीय अमीरों और सभी जमाअत के सदरों के साथ मीटिंग

कार्यक्रम के अनुसार सवा छ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद से जुड़े हुए हॉल में आए जहां राष्ट्रीय कार्यकारिणी जमाअत जर्मनी, सभी स्थानीय अमीरों, क्षेत्रीय अमीरों और सभी जमाअत के सदरों की हुज़ूर अनवर

अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग थी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मीटिंग का आरम्भ दुआ के साथ फरमाया। दुआ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर जनरल सैक्रेटरी साहिब ने बताया कि 193 सदर जमाअत और 71 क्षेत्रों के सदर हैं उनमें से पांच की ओर से क्षमा आई है। बाकी सब हाज़िर हैं।

जनरल सैक्रेटरी

* हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर जनरल सैक्रेटरी ने बताया कि वर्तमान में 140 के लगभग सदरों की रिपोर्टें नियमित रूप से आ रही हैं। जिनकी रिपोर्ट नहीं आती उन्हें ख़त लिखा जाता है कि आप की रिपोर्ट नहीं मिली अगर जवाब नहीं आता है, तो ख़त फिर से लिखा है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, जो इतने सुस्त सदर हैं क्या आपने कभी इन की रिपोर्ट केंद्र में की है? इस पर जनरल सैक्रेटरी ने कहा कि उनकी रिपोर्ट केंद्र पर नहीं की गई थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आप उन की रिपोर्ट नहीं करते हैं। ख़ुद भी सुस्त है तभी सदरों को भी छुट्टी मिल गई है और वे आराम करते हैं। हालांकि आप लोगों को उनका पीछा करना चाहिए था।

उसके बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर जनरल सैक्रेटरी ने कहा किDietzenberg अमीर की रिपोर्ट प्राप्त नहीं हुई है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर स्थानीय प्रतिनिधि डाइटजेनबर्ग ने कहा कि हमारे जनरल सैक्रेटरी की तरफ से कुछ कमज़ोरियां हुई थीं। बाद में इस में सुधार कर लिया गया था। अब पिछले महीने से फिर से रिपोर्ट भेजना शुरू कर दिया था। जनरल सैक्रेटरी कुछ बीमार थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यदि वह बीमार थे, तो आप मौजूद थे। आप ने अपने जनरल सैक्रेटरी से दो महीने तक पूछा ही नहीं।? आप लोग उहदा लेने के लिए बैठे होते हैं कि कुर्सी मिल जाए और सदर या अमीर बन जाएंगे और हमारी जमाअत के अन्दर एक शान बन जाएगी इसके अलावा, आपको कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है। जब आप एक अधिकारी के रूप में अपने बारे में सोचते हैं, तो ये सारी समस्याएं उसी समय पैदा होती हैं। यदि आप लोग सेवक लिखने लगें तो आप लोगों की सभी समस्याएं दूर हो जाएं। सदर शिकवा करते हैं कि क्षेत्रीय अमीर काम नहीं करते हैं। उहदेदारों का कहना है कि केंद्र काम नहीं करता है। एक-दूसरे पर मलबा डाला जाते हैं और कोई भी काम नहीं कर रहा है। न नेशनल अमला काम कर रही है। न सदर काम कर रहे हैं और लोगों में शिक्वे पैदा हो रहा है। लोग कहते हैं कि इन उहदेदारों ने अपनी चौद्धराहट, एक संप्रभुता बनाई हुई है और कोई भी सेवा की भावना नहीं है। मुरब्बियों से अधिकतर स्थानों पर अच्छा व्यवहार नहीं। यदि जमाअत के लोग हैं, तो उन्हें अक्सर अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता ये पद क्यों लिए हैं? आप लोग तो ख़िदमत को इक फज़ले इलाही जानो की तकरीर करते हैं। फज़ले इलाही इस प्रकार तो नहीं मिलता कि तीन तीन महीने तक ख़बर ही नहीं। आप लोग सदर और अमीर भी दुनियादारी में डूब चुके हैं अगर आप काम नहीं कर सकते हैं और क्षमा मांग लें अपने आप को गुनाहगार क्यों बनाते हैं? एक तो काम नहीं करते फिर अल्लाह तआला के सामने गुनाहगार हो जाते हैं। और अधिकांश सदरों की अक्सर इसी तरह की रिपोर्ट है कि जिस प्रकार काम करना चाहिए वे ऐसा नहीं करते। यह तो कोई काम करने का तरीका नहीं है। शिकवे पैदा हो रहे हैं कि आप लोग नेशनल अमला वाले काम नहीं कर रहे हैं। मौत के बाद, अल्लाह तआला ने आपसे यह नहीं पूछना कि तुम सदर थे और तुम ने इसलिए काम नहीं किया क्योंकि राष्ट्रीय आमला ने काम नहीं किया। राष्ट्रीय आमला ने अपना जवाब देना है, सदर को अपना जवाब देना है, स्थानीय अमीर को अपना जवाब देना है, क्षेत्रीय अमीर ने अपना जवाब देना है। हर किसी को अपना हिसाब देना है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: स्थानीय अमीर पर एक बड़ी ज़िम्मेदारी है। यदि अमीरों की यह स्थिति में है, तो छोटी छोटी जमाअतों की अवस्था तो और बुरी होगी।

उसके बाद, कैल्सराए के सदर ने कहा कि उनकी आमला सक्रिय नहीं है। उन्हें इस साल एक नई ज़िम्मेदारी मिली है। उनकी जमाअत के सदस्यों की संख्या लगभग 120 है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यदि यह अमला सक्रिय नहीं थी, तो आपको केंद्र में रिपोर्ट करनी चाहिए। यदि आप को इस वर्ष ज़िम्मेदारी मिली है तो आठ नौ महीने बीत चुका है। आपकी जमाअत के जनरल सैक्रेटरी को बताएं और रिपोर्ट भिजवाया करे। यह सदरों का भी काम है और अमीरों का भी है वे इस बात का ध्यान रखें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर एक अन्य सदर ने कहा कि उन की उम्र 27 वर्ष है। उनकी आमला में अंसारुल्लाह के लोग भी शामिल हैं लेकिन वे सुस्त हैं हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "तब्लीग़ और तरबियत का काम तो हमारा एक बुनियादी काम है अगर यह दो काम नहीं हो रहे तो बाकी काम क्या होंगे? अगर यह दो विभाग सक्रिय हो जाए तो बाकी विभाग अपने आप सक्रिय हो जाएगें। न तो आप के अमूरे अम्मा के विभाग में कोई मस्ले होंगे न ही कज़ा में। माल को भी ज़रूरत नहीं पड़ेगी। क्योंकि अगर एक अहमदी की सही तरबियत हो जाए और अगर उस को इहसास हो कि उस की ज़िम्मदेरियां क्या हैं और किस प्रकार उन को पूरा करना है तो अपने आप सक्रिय हो जाते हैं हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "आपको डरने की आवश्यकता नहीं है।" आपको काम लेना है, चाहे वे अंसार हों या छोटे हों, उनके साथ काम करें। मैंने देखा है कि ख़ुद्दामुल अहमदिया में काम करने की अधिक भावना है और रिपोर्ट भी दे देते हैं। अधिकतर यहां सुस्ती तो अंसार की ओर से होती है।

सैक्रेटरी तब्लीग़

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सैक्रेटरी को संबोधित करते हुए कहा: "आपकी लीफ लेट की रिपोर्ट तो यह है कि आठ लाख में बांटे गए हैं। वह तो हो गए लेकिन जो वितरण कर रहे हैं जो पहले दिन से वितरण कर रहे हैं या बंटने वालों की संख्या भी बढ़ रही है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सैक्रेटरी साहिब तब्लीग़ ने कहा कि इस समय पांच हज़ार से अधिक लोग लीफ लेट को बांटने में भाग ले रहे हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "ख़ुद्दामुल अहमदिया की तजनीद 10,000 है और अंसारुल्लाह की 5 हज़ार उन दोनों को मिला कर 15,000 तो यही बन जाते हैं और कुछ लज्ना भी भाग लेती होंगी। लज्ना की तज्नीद 13 हज़ार के क़रीब है। ये कुल मिला कर 28 हज़ार के लगभग बन जाते हैं और इस में से केवल 5 हज़ार हिस्सा ले रहे हैं और वह भी बारी बारी लेते होंगे। अगर स्थायी दाई इल्लाह नहीं बनते तो लीफ लेटिंग में सारों को शामिल करें ताकि प्रत्येक अहमदी को इहसास हो कि इस का तब्लीग़ में हिस्सा होना चाहिए। आप के3500 हज़ार तो वाक्फीने नौ हैं और इन में 15 साल के ऊपर 2000 के निकट होंगे। अगर आप इस प्रकार सब को जोड़ लें तो इन से बहुत काम हो सकता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के प्रश्न पर सैक्रेटरी साहिब तब्लीग़ ने कहा कि इस वर्ष, 15 लाख लीफ लेटस वितरित किए गए हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "अगर पांच हज़ार लोगों ने विभाजित किया है, तो प्रति व्यक्ति तीन सौ लीफ लेटस आए और यदि आप लीफ लेट बांटने वालों की संख्या दस हज़ार तक ले जाते हैं, तो लीफ लेट की संख्या तीन मिलियन तक बढ़ जाती है। यदि वक्फे नौ को ख़ुद्दामुल अहमदिया को, अंसारुल्लाह, के सफ दोयम के अंसार सफ अव्वल के भी काफी अंसार आसकते हैं,इन सब को स्थायी रूप से जोड़ लें तो यह संख्या कम से कम दस हज़ार हो सकती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सैक्रटरी तब्लीग़ ने कहा: "जर्मनी की आबादी 80 मिलियन है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, "अगर आबादी 80 मिलयन है और आप ने 5.1 बांटे हैं तो इस का अर्थ यह है कि सारों तक पहुंचने में आप को पचास साठ साल लग जाएंगे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "मैंने यह भी कहा है कि जब आप एक जगह बांट लेते हैं, तो वहां जमाअत के परिचय का का दूसरा पन्फलेट आना चाहिए । एक बार तो परिचिय हो जाता है फिर लोग भूल जाते हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "आप लोग तो अहमदी हैं और ख़िलाफत के साथ बैअत का संबंध है।" आप लोग मेरे ख़ुत्बे सुनते हैं जुम्अ: के ख़ुत्बे सुनते हैं। एक जुम्अ में दो नसीहत की जाती है वह अगले जुम्अ में भूल जाते हैं तो इस अवस्था में आप इन से जो अहमदी भी नहीं हैं और इसाई हैं या धर्म में दिलचस्पी नहीं कैसे आशा करते हैं कि उन्हें छह साल बाद याद करवाएं तो उन्हें जमाअत के बारे में कुछ याद होगा।?

* सैक्रटरी तब्लीग़ ने निवेदन किया कि हमारा यही तरीका है कि पहले फलायर के बाद दूसरा फलायर बांटा जाता है और फिर तीसरा फलायर बांटा जाता है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सैक्रेटरी तब्लीग़ ने बताया कि एक साल के बाद दूसरे फलायर की आता है हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "इसका कारण

यह है कि आपके पास कम आदमी है। लोगों की भागीदारी कम है, हालांकि इसे और अधिक किया जा सकता है। लोगों की संख्या में वृद्धि करें। यदि प्रत्येक अहमदी को इस काम की भागीदारी को महसूस करने वाला हो जाए, तो वह प्रशिक्षण में भी सुधार करेगा। लोगों में यह भी एक साहस होगा कि हम यह पम्फेलट जमाअत अहमदिया के प्रतिनिधित्व में कर रहे हैं, लोग जब पंफलेट लेंगे या विरोद्ध करेंगे दोनों अस्थाओं में हमारे अन्दर साहस पैदा होगा और इहसास पैदा होगा कि हमारी क्या जिम्मेदारियां हैं और इन ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के लिए तब्लीग़ के लिए आगे आना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैंने आज से पांच साल पहले कहा था कि ऐसी योजना तैयार करें कि आप के प्रत्येक नागरिक को अगले 10 सालों तक जमाअत का परिचय हो जाए। आपकी मस्जिदें बन रही हैं और मुझे वहां से फीड बैक आती है तो ऐसा लगता है जहां मस्जिदों का निर्माण है वहां भी जमाअत का परिचय नहीं है बाकी जगहों पर क्या होगा? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: सबसे पहले यह देखें कि जहां अधिक आबादी कितनी अधिक है, उन्हें पहले कवर करें। फिर जब एक बार यह क्षेत्र कवर हो जांए तो दूसरे सूबों और क्षेत्रों में जाएं और हिक्मत से काम लें। आप के पास जो आदमी है जो ख़ुद्दाम हैं अंसार हैं इन को प्रयोग करें।

इस पर सैक्रेटरी तब्लीग़ ने निवेदन किया कि हम एसा ही कर रहे हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जो नतीजा आना चाहिए था है वह तो नहीं आया। आप ने पिछले पांच सालों में छह मिलियन लोगों तक सन्देश पहुंचया हैं और साठ लाख की आबादी का आठ प्रतिशत हिस्सा बनाते हैं। इस प्रकार दस वर्षों के अनुसार, आपको 50 प्रतिशत पाँच वर्ष करना था। अगर आप पाँच वर्षों में कम से कम 50 प्रतिशत नहीं कर सकते, तो तीस प्रतिशत तो कर सकते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कहा: आप के पास लोगों की संख्या कम है। जो लोग नहीं आते उन में से कुछ सदरों या स्थानीय जमाअत से नाराज़ हैं या अमीर जमाअत के साथ गुस्से में हैं। कोई राष्ट्रीय कार्यकारिणी से नाराज है, कोई ख़ुद्दामुल अहमदिया के उहदेदारों से नाराज़ है, कुछ अंसारुल्लाहके उहदेदारों से नाराज़ हैं। जब भी आप उनसे पूछो तो यह जवाब है कि हम ने अमुक कारण से यह काम किया है और अमुक के कारण पीछे हट गए। हालांकि उहदेदारों का, सदरों का और उनकी कार्यकारिणी के पदाधिकारियों का, सबका यह काम है कि जमाअत के लोगों को प्यार,मुहब्बत से पास लाएं, न कि रोब डालने से। और यही सही तरीका है जिस से आप अपने लोगों को सही ढंग से प्रशिक्षित कर सकते हैं और तब्लीग़ के क्षेत्र में भी आगे बढ़ सकते हैं।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सैक्रेटरी तब्लीग़ ने बताया कि इस साल 126 बैअतें हो चुकी हैं। इनमें से 59 अरब और 32 जर्मन हैं।

सैक्रेटरी तरबियत

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सैक्रेटरी तरबियत ने बताया कि प्रशिक्षण के संदर्भ में जमाअत के स्तर पर जो सबसे बड़ी कोशिश की जा रही है वह मस्जिदों की आबादी है। इस संदर्भ से विशेष प्रयास किया जा रहा है।

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: दो महीने पहले मैंने विशेष रूप से दुआ के हवाले से एक ख़ुत्बा दिया था। विभिन्न स्थानों और बड़ी जमाअत से रिपोर्टें हैं कि एक अंतर है आपके पास यहां कितना अंतर है? इस पर सैक्रेटरी तरबियत ने कहा कि जर्मनी में अल्लाह तआला की कृपा से बहुत अंतर है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के ख़ुत्बा जुम्अ: की रोशनी में हम ने मज्लिस कार्यकारिणी के सदस्यों के लिए नए कार्ड तैयार किए हैं ताकि कार्यकारिणी के सदस्य मस्जिदों में हाज़िर हों और अन्य मित्रों के लिए अपना नमूना पेश करें।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने उन जमाअत के विषय में पूछा जिन के पास नमाज़ केंद्र नहीं हैं। इस पर एक जमाअत के सदर ने अर्ज़ किया कि शहर में एक हॉल है वहाँ शुक्रवार आदि अदा कर लेते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर एक सदर ने अर्ज़ किया कि उनकी कार्यकारिणी के सदस्यों की संख्या सत्रह और शुक्रवार के दिन 20के लगभग हाज़री हो जाती है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: पहले तो अपनी कार्यकारिणी के सदस्यों को नमाज़ में नियमित करें सबसे पहले को आमला के मेम्बरों का सुधार करें। आपका घर आपकी आमला है। सबसे पहले, संगठन के सदस्यों का सुधार करें। आपके जमाअत की आमला की संख्या 17 है इसी तरह, अंसारुल्लहा और ख़ुद्दामुल अहमदिया के के अमला के सदस्य होंगे। अगर ये सारे नियमित हों तो तीस पैंतीस के पास उन की संख्या बन जाती हे। अपनी कार्यकारिणी के सदस्यों को नमाज़ की आदत डालें और अगर कार्यकारिणी सही हो और अपना सुधार कर ले तो बाकी स्वत: सुधार हो जाएगा। आप लोग दूसरों का सुधार करने के बजाय, अपने आप को पहले सुधारें ।

इसके बाद, सैक्रेटरी तरबियत निवेदन किया कि कोशिश कर रहे हैं कि पारिवारकि मामलों में सुधार लाया जाए। इसके लिए, हम मुरब्बियों के साथ मिल कर योजना के साथ काम कर रहे हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इस संदर्भ में युवाओं में भी विशेष रूप से काम होना चाहिए कई बाप सफ्फ दोयम के अंसार के बारे में भी भी शिकायतें आती हैं। लजना की ओर से भी शिकायतें आती हैं कि कुछ महिलाएं या लड़कियां ऐसी भी हैं जिन्होंने यहां वीज़ा के लिए विवाह किया और बाद में समाप्त हो गए। लेकिन अधिकतक मर्दों का भी दोष होता है। यदि 40 प्रतिशत महिलाएं दोषी हैं, तो 60 प्रतिशत पुरुष दोषी हैं । अक्सर पुरुष स्वयं सही दोषी होते हैं और आशा करते हैं कि महिला का पहले सुधार हो। पहले अपने आप का सुधार करें। यदि पुरुष अपना स्वयं का सुधार करते हैं, तो घर ठीक होगा, बच्चों को भी प्रशिक्षित किया जाएगा और स्वयं की भी। और अगर नहीं तो महिला हाथ उठाएगी, झगड़े पैदा होंगे। कभी-कभी तीन तीन, चार चार बच्चे होते हैं और फिर झगड़े हो जाते हैं और ख़लअ और तलाकें शुरू हो जाती हैं। इस के लिए प्रत्येक सतह पर सदरों को भी अपने सैक्रट्रीयन तरबियत को भी क्रियान्वित करने की ज़रूरत है। और आप को भी स्थायी रूप से उन पर नज़र रखने की ज़रूरत है इसके लिए एक व्यापक कार्यक्रम बनाएं और इस की भी रिपोर्ट लियां करें कि इन घरों की पहले क्या अवस्था थी और अब स्थिति है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "इसी तरह, इस इस्लाही कमेटी का यह काम नहीं है कि जब घटना हो जाए तो इसके बाद नजर रखें बल्कि लजना अपने स्तर पर, ख़ुद्दान अपने स्तर पर और अंसार अपने स्तर पर और जमाअत की इस्लाही कमेटी के मेम्बर उन की प्रत्येक स्थान पर नज़र होनी चाहिए। ऐसे मामले जब उठते हैं तो एक दिन में नहीं उठ रहे होते। घर में जो समस्याएं पैदा हो रही होती हैं वो भी बाहर निकल रहे होते हैं। जब बाहर निकल रहे होते हैं तो उस समय सुधार की कारवाई शुर होनी चाहिए। सदरों को भी, सैक्रेट्रीयियों को भी, ख़ुद्दामुल अहमदिया को भी अंसारुल्लाह को भी और जमाअत को केन्द्रीय रूप से भी उसी समय कारवाई करनी चाहिए ताकि मस्ले कम हों।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यहाँ स्वतंत्रता के नाम पर पुरुष अधिक स्वतंत्र होते जा रहे हैं और यहां के पैदा हुए लड़के और लड़कियों की भी शिकायतें आ रही हैं। कुछ लोग जो पाकिस्तान से आते हैं उन में से भी कुछ लड़के और लड़कियों दोनों से शिकायतें आ रही हैं इसलिए इसे पूरी तरह से समीक्षा की जानी चाहिए कहां हम कमज़ोर हैं और हम इन कमज़ोरियों को दूर कर सकते हैं। कौन अधिक दोषी है और दोष का कारण क्या है? क्या केवल संसारिक कारण हैं या वास्तव में किसी पक्ष की ओर से दूसरे पक्ष को कष्ट पहुंचाया जा रहा है। इस के बाद जब मामलो उहदेदारों के पास जाते हैं, तो वे भी नकारात्मक रुख दिखाते हैं, जिससे और अधिक बात बढ़ जाती है। आपको इन सभी चीज़ों का पता होना चाहिए।

* सैक्रेटरी तरबियत ने कहा कि हम तरबियत के सैक्रेट्रियों को इस साल क्रियान्वित कर रहे हैं और रिफ्रेशर कोर्स भी करवाए हैं। इन्शा अल्लाह और अधिक काम करेंगे। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: "इस साल क्यों सक्रिय किया हैं?" आपको पहले सक्रिय करना चाहिए था? इस का परिणाम भी आना चाहिए। आप लोग इंशा अल्लाह से माशा अल्लाह भी किया करें।

सैक्रेटरी रिश्ता नाता

* सैक्रेटरी रिश्ता नाता ने अपनी रिपोर्ट देते हुए कहा कि हमारे पास रिश्तों की संख्या बहुत कम है। इस में कुछ मस्ले हैं। लड़कों की संख्या बहुत कम है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "ये समस्याएं

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP- 45/2017-2019- Vol. 2 Thursday 26 October 2017 Issue No. 43

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

तो संसार में हर जगह हैं। एक तो लड़कों की संख्या कम है और ऊपर से शिक्षा की गुणवत्ता कम लेकिन लड़कियों ने तो शादी करनी हैं। इसी लिए तो मैंने एक अंतरराष्ट्रीय कमेटी भी बनाई है। आप ने तबशीयर वालों को कितना डेटा भेजा है?

इस पर सैक्रेटरी रिश्ता नाता ने अर्ज़ किया कि जो केंद्रीय स्तर पर कमेटी काम कर रही है उसे हम अभी तक अपने डेटा नहीं भिजवा सके क्योंकि कुछ कानूनी मजबूरियां हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मुझे समझ नहीं आई कि कानूनी मजबूरियां हैं आप की तरफ से इसका उत्तर आया है कि किसी के व्यक्तिगत डेटा को दूसरे देश में नहीं भेजा जा सकता। मुझे समझ नहीं आ रही दुनिया में बाकी देश तो भिजवा रहे हैं। एक अहमदी जब बैअत करता है तो अहमदी है आप ने किसी ग़ैर अहमदी का डाटा तो नहीं भिजवाना कि वह कोर्ट में जाकर आप लोगों को सू कर देगा। यह तो केवल एक बहाना है आप का पहले जो आप दे चुके हैं जो मैं पढ़ चुका हूं। मेरे निकट यह कोई उपाय नहीं है केवल बहाना है जब आप डेटा लेते हैं तो उसी समय क्यों उस से नहीं लिखवा लेते कि तुम केवल इसी देश में रिश्ता करना चाहते हो और तुम्हारी डेटा इसी देश में रहे। और तुम्हारा डेटा इसी देश में रहे या केन्द्रीय कमेटी को भिजवा दिया जाए?

इस पर सैक्रेटरी रिश्ते ने कहा कि हमने एक खाना बना लिया है, जिसे लोग नहीं भरते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यह तो उसी समय हो सकता है जब आपके सदर सक्रिय हो, संबंधित सैक्रेटरी रिश्ते सक्रिय हों। प्रत्येक स्तर पर संबंधित सैक्रेटरी रिश्ता को सक्रिय करना भी आपका काम है आप अपने सैक्रेटरी के साथ यह काम क्यों नहीं करते? यहां, जर्मनी में, आपको सब कुछ अपने पास दबा कर रखने की आदत पड़ गई है। आप जैसा पढ़ा लिखआ आदमी हो या अनपढ़ आदमी हो प्रत्येक कब दिमाग़ में पड़ गया है कि हमारे देश की चीज़ें हैं और हम ने यहीं रखनी हैं। हम ने व्यक्तित्व निर्धारित करना है अमेरिका और कनाडा आप से बड़े देश है, वहां तो यह काम हो रहा है। वहां से तो डेटा आ रहे हैं आगर काम करना हो तो सौ तरीके निकाले जा सकते हैं यह जवाब दे देना के काम नहीं हो सकता मेरे निकट ये सब बहाने हैं। आप ख़ुद अपने आप को सक्रिय करें जब ख़ुद ठीक नहीं तो जमाअत के लोगों से क्या आशा रखते हैं?

सैक्रेटरी तहरीक जदीद

*सैक्रेटरी तहरीक जदीद ने अपने विभाग की रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि हमें तहरीक जदीद में 34 हज़ार शामिल करने का लक्ष्य मिला था जो हम ने पूरा कर लिया था। अगले साल का लक्ष्य 35,000 को जोड़ना है

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैंने इसलिए कहा था कि चाहे कोई Euro दे या पचास सेंट ही दे लेकिन शामिल होने वालों की संख्या बढ़ाने की कोशिश करें। लोगों को क़ुर्बानी की आदत डालनी चाहिए यह जरूरी नहीं है कि आप ने बड़ी बड़ी रकमें लेनी हैं। शामिल होने वालों की संख्या में वृद्धि करनी होनी चाहिए ताकि प्रत्येक को इहसास हो कि हम वित्तीय क़ुरबानी का हिस्सा हैं। लोगों को वित्तीय क़ुरबानी के महत्व का पता लगना चाहिए

सैक्रेटरी वसाया

* इस के बाद सैक्रेटरी वासाया ने अपने विभाग की रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि इस समय कुल वसीयत करने वालों की संख्या में कुल संख्या 11 हज़ार 589 है। और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सैक्रेटरी ने कहा कि कुल कमाने वाले 14 हज़ार 618 हैं इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इसका मतलब है कि आपने 50% का लक्ष्य हासिल कर लिया है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यदि आपके कमाई वाले 14,000 है, तो शेष 28,000 बेकार बैठे हैं? सैक्रेटरी,वसाया ने कहा कि कुल मिला कर जो चन्दा देने वालों की संख्या बनती है, 1 9, 400 है। इसमें पॉकेट मनी और कमाई वाले दोनों शामिल हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "जेब खर्च करने वालों के लिए तो चन्दा अनिवार्य ही नहीं है। यदि कोई वसीयत करता है तो उस के लिए है लेकिन जो जेब खर्च ले रहा है या घर की महिला है या बच्चा या किसी को तोहफा के रूप में कुछ जेब खर्च मिलता है, तो उस पर चन्दा आम लागू ही नहीं होता। वह कमाने वाला नहीं है कमाने वाला व्यक्ति वह है जो किसी भी तरह का कारोबार करता, नौकरी करता है या उसकी मासिक आय है। इसमें छात्र और गृहिणियां शामिल नहीं हैं आप लोग स्टूडेंट्स और घरेलु महिलाओं को कमाने वालों में शामिल करते हैं कि उनका पति उन्हें दो सौ यूरो दे रहा है, या किसी बच्चे को सौ यूरो मिल रहा है वे तो कमाने वाले लोगों में शामिल नहीं होते।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आपकी तजनीद 43, 44 हज़ार है और आप कह रहे हैं कि इस में से 14 हज़ार 618 कमाने वाले हैं इसका मतलब है कि बाकी सभी शेष बेकार बैठ कर रोटी खाते हैं।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया ने बताया कि उनकी तजनीद दस हज़ार है जबकि इसमें से पांच हज़ार कमाने वाले हैं। इसी तरह, सदर मज्लिस अंसारुल्लाह ने कहा कि उनकी तज्नीद 5000 है, जबकि कमाने वालों की संख्या 4 हज़ार है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इसका मतलब है कि14000 हज़ार में से शेष पांच हज़ार महिलाएं कमाती हैं?" सैक्रेटरी साहिब ने कहा कि इन के पास जो बजट है जो जमाअतों की तरफ से मिला है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इसका मतलब है कि ख़ुद्दामुल अहमदिया अपने स्तर पर काम नहीं कर रहा है। उन्हें पता ही नहीं कि कितने कमाने वाल हैं इसी तरह, अंसारुल्लाह भी सही काम नहीं कर रहा है वे यह भी नहीं जानते कि वे कितने कमा रहे हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आप के पास जो रिपोर्ट है इस से ख़ुद्दाम और अंसार की रिपोर्ट नहीं मिल रही है। या तो आपके आंकड़े ग़लत हैं या दोनो संगठन काम नहीं कर रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने जर्मनी जमाअत की तजनीद की समीक्षा की जिस के अनुसार सात साल से कम उम्र के बच्चों की संख्या पांच हज़ार के क़रीब बनी जबकि अत्फाल और नासरात की संख्या साढ़े छह हज़ार बनी। इसके अलावा, छात्रों की संख्या चार हज़ार के लगभग बनी।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad